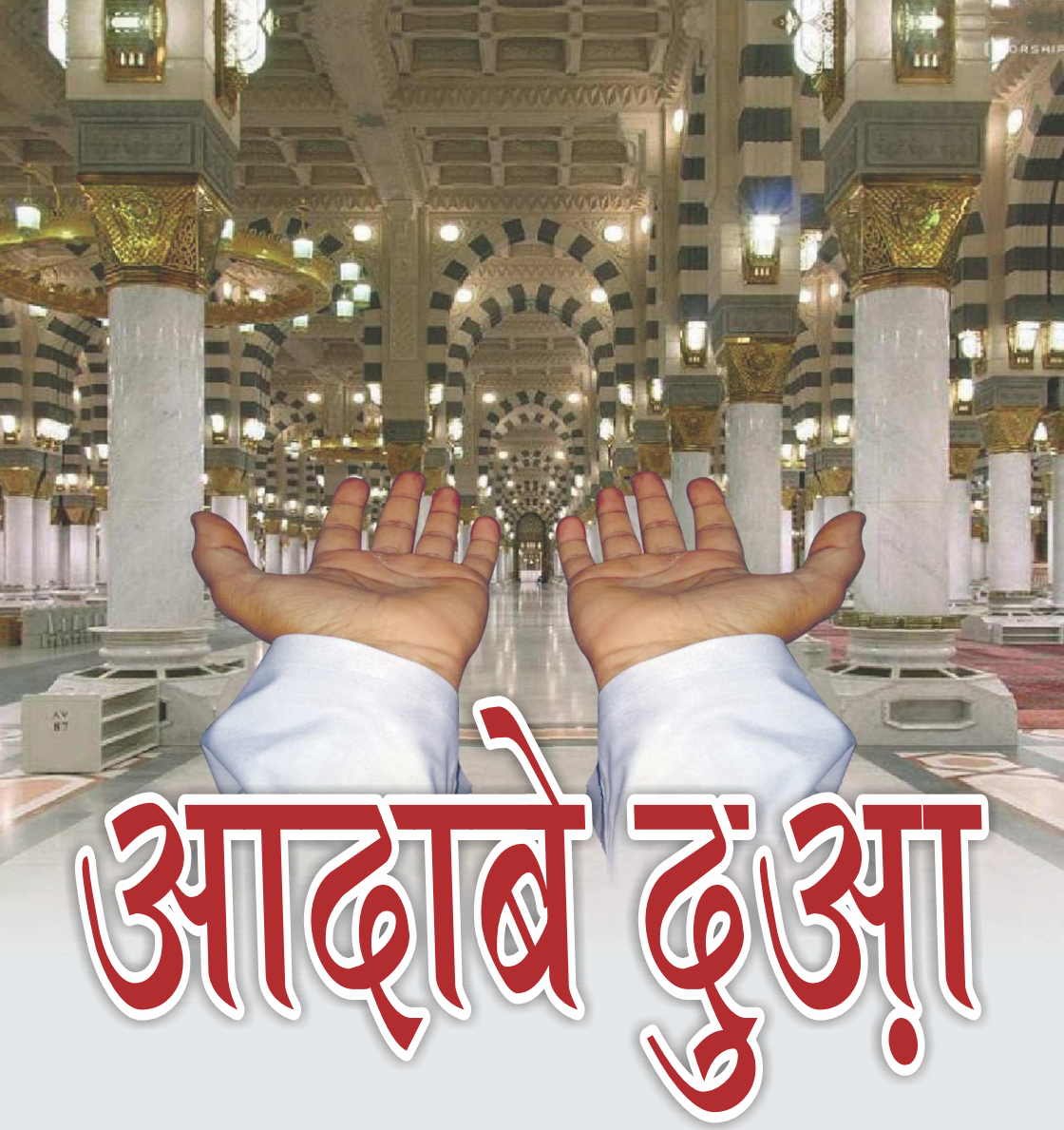

आदाबे दुआ़

AADABE DUAA (HINDI)

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

(दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(مستطرف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अ़मल न किया) (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइये ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

मजलिसे तराजिम हिन्द (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ येह रिसाला मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने उर्दू ज़बान में मुरत्तब किया है । मजलिसे तराजिम (हिन्द) ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है ।

इस रिसाले में अगर किसी जगह ग़लत़ी पाएं तो मजलिस को सफ़ह़ा और सत़र नम्बर के साथ Sms, E-mail, Whats App या Telegram के ज़रीए़ इत्तिलाअ़ दे कर सवाबे आख़िरत कमाइये ।

मदनी इल्तिजा : इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबित़ा न फ़रमाएं !!!

...राबित़ा :-

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदाबाद-1, गुजरात (हिन्द) ☎ 9327776311

E-mail : tarajim.hind@dawateislami.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ी = ئُ	ु = وُ	आ = آ	य = ی	ह = ه	व = و	न = ن

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरवरे ज़ीशान, मक्की मदनी सुल्तान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : اَلدُّعَاءُ مَحْجُوْبٌ عَنِ اللّٰهِ حَتّٰى يُصَلّٰى عَلٰى مُحَمَّدٍ، وَعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ या'नी दुआ़ **अल्लाह** पाक से हिजाब में है (या'नी क़बूल नहीं होती) जब तक मुहम्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) और उन की आल पर दुरूद न भेजा जाए।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दुआ़ का त़रीक़ा मुस्त़फ़ा ने सिखाया

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : एक मरतबा **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक ऐसे शख़्स की इ़यादत के लिये तशरीफ़ ले गए जो बहुत कमज़ोर हो चुका था। नबिये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस से फ़रमाया : क्या तुम **अल्लाह** पाक से कोई दुआ़ करते थे ? उस ने अ़र्ज़ की : जी हां ! मैं येह दुआ़ करता था : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! अगर तू मुझे आख़िरत में कोई सज़ा देने वाला है तो वोह दुन्या में ही दे दे। नबिये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : سُبْحَانَ اللّٰه ! तुम इसे बरदाश्त करने की त़ाक़त नहीं रखते, तुम यूं क्यूं नहीं कहते : ऐ हमारे रब ! हमें दुन्या और आख़िरत में भलाई अ़त़ा फ़रमा और हमें दोज़ख़

1 ..... شعب الایمان، باب فی تعظیم النبی... الخ، ۲/۲۱۶، حدیث: ۱۵۷۶

के अ़ज़ाब से बचा। फिर आप صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस के लिये दुआ़ की तो अल्लाह पाक ने उसे शिफ़ा अ़ता फ़रमा दी।(1)

दुआ़ की अहम्मिय्यत व फ़ज़ीलत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुआ़ की अहम्मिय्यत हर मुसलमान जानता है। हमें अल्लाह पाक से क्या, किन अल्फ़ाज़ से, किस त़रह़ मांगना चाहिये इस की अहम्मिय्यत का अन्दाज़ा बयान कर्दा ह़दीसे पाक से लगाया जा सकता है। हमारा ख़ालिक़ो मालिक عَزَّوَجَلَّ कैसा करीम है कि मांगने वालों से खुश होता और न मांगने वालों पर ग़ज़ब फ़रमाता है लिहाज़ा हमें चाहिये कि अल्लाह करीम से अपनी ह़ाजात और ख़ैर त़लब करते रहें। अल्लाह पाक से ख़ैर त़लब करने को : "दुआ़" कहते हैं और "दुआ़" न सिर्फ़ इ़बादत है बल्कि नबिये पाक صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اَلدُّعَاءُ مُخُّ الْعِبَادَةِ या'नी दुआ़ इ़बादत का मग़्ज़ है।(2) اَلدُّعَاءُ سِلَاحُ الْمُؤْمِنِ وَعِمَادُ الدِّيْنِ وَنُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ या'नी दुआ़ मोमिन का हथियार, दीन का सुतून और आस्मानो ज़मीन का नूर है।(3) दुआ़ ऐसी इ़बादत है जो इस बात का एह़सास दिलाती है कि गोया बन्दा अल्लाह पाक से हम कलाम है। दुआ़ के ज़रीए़ ही बन्दा अल्लाह करीम की बारगाह में अपनी ह़ाजात व ज़रूरियात पेश करता है। दुआ़ बन्दे को अपने करीम रब की जनाब में पहुंचाती, उस के ह़ुज़ूर आ़जिज़ी करवाती और उस की अ़ज़मतों का कलिमा पढ़वाती है। जिसे दुआ़ की तौफ़ीक़ दी गई, उसे बहुत बड़ी ख़ैर की तौफ़ीक़ दी गई और उस के लिये भलाई के दरवाज़े खोल दिये गए और जिस के

---

1 ...... مسلم، کتاب الذکر والدعا الخ، باب کراھة الدعاء بتعجیل الخ، ص ۱۱۰۸، حدیث: ۲۸۳۵

2 ...... ترمذی، کتاب الدعوات، باب ماجاء فی فضل الدعاء، ۵/۲۴۳، حدیث: ۳۳۸۲

3 ...... مستدرک حاکم، کتاب الدعاء، الدعاء سلاح المؤمن... الخ، ۲/۱۶۲، حدیث: ۱۸۵۵

लिये दुआ़ का दरवाज़ा बन्द हो गया उस के लिये ख़ैरो आ़फ़िय्यत का दरवाज़ा बन्द हो गया।

दुआ़ से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें

दुआ़ जब इतनी अहम इ़बादत है तो इस से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें भी ज़रूर कर लेनी चाहियें क्यूंकि बिग़ैर निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता। जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा होंगी उतना ही सवाब भी ज़ियादा मिलेगा। दुआ़ मांगने से पहले की चन्द निय्यतें मुलाह़ज़ा कीजिये :

(1) **अल्लाह** पाक की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिये दुआ़ करूंगा (2) दुआ़ कर के हुक्मे क़ुरआनी ﴿اُدْعُوْنِیْۤ اَسْتَجِبْ لَكُمْ﴾ (پ۲۴، المؤمن:۶۰) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** मुझ से दुआ़ करो मैं क़बूल करूंगा।) पर अ़मल करूंगा (3) अह़ादीसे मुबारका में बयान कर्दा दुआ़ के फ़ज़ाइल पाऊंगा (4) ब तकल्लुफ़ मुक़फ़्फ़अ़ व मुसज्जअ़ अल्फ़ाज़ से बचूंगा (5) दिखलावे के रोने से परहेज़ करूंगा (6) दुआ़ में ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़ पैदा करने की कोशिश करूंगा (7) दुआ़ के ज़ाहिरी व बात़िनी आदाब का लिह़ाज़ रखूंगा (8) दुआ़ का आग़ाज़ ह़म्दे इलाही और दुरूद शरीफ़ से करूंगा (9) इख़्तिताम पर आयते दुरूद पढ़ कर दुरूद शरीफ़ पढ़ूंगा (10) अश्आ़र पढ़ते हुए इख़्लास पर नज़र रखूंगा[1] (11) दुआ़ का इख़्तिताम इन आयात पर करूंगा :

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ

عَمَّا یَصِفُوْنَ ﴿۱۸۰﴾ وَ سَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِیْنَ ﴿۱۸۱﴾ وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۱۸۲﴾ (پ۲۳، الصّٰفّٰت:۱۸۰-۱۸۱-۱۸۲)

मदीना

[1]......अमीरे अहले सुन्नत, जा नशीने अमीरे अहले सुन्नत और निगरान व अराकीने शूरा के इ़लावा किसी भी मुबल्लिग़ को दुआ़ में त़र्ज़ के साथ अश्आ़र पढ़ने की तन्ज़ीमी त़ौर पर इजाज़त नहीं। (मर्कज़ी मजलिसे शूरा)

दुआ के आदाब को पेशे नज़र रखिये

दुआ की अहम्मिय्यत व फ़ज़ीलत के पेशे नज़र उस के आदाब का जानना और दौराने दुआ उन्हें बजा लाना ज़रूरी है। हम देखते हैं कि इन्सान को दुन्यवी बादशाह या किसी भी ओ़हदेदार वग़ैरा से कोई ग़रज़ या ह़ाजत हो तो इन्तिहाई अदबो एह़तिराम और तवज्जोह के साथ उस को अपनी दरख़्वास्त पेश करता है क्यूंकि उसे मा'लूम है कि अगर ला परवाही और ग़फ़्लत से काम लिया तो बात नहीं बनेगी। ग़ौर तो कीजिये जब दुन्यवी बादशाहों, उन के दरबारों और ओ़हदेदारों के पास जाने के आदाब बजा लाने का येह आ़लम है तो **अल्लाह** पाक जो बादशाहों का भी बादशाह है, उस की बारगाह में अपनी ह़ाजत पेश करने में किस क़दर एहतिमाम होना चाहिये। येह हर ज़ी शुऊ़र समझ सकता है। लिहाज़ा जब भी दुआ मांगें तो इन्तिहाई तवज्जोह और यक्सूई के साथ दुआ के आदाब बजा लाते हुए मांगिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ दुआ क़बूल होगी।

दुआ में अल्फ़ाज़ का इन्तिख़ाब

दुआ के दौरान बेहतरीन अल्फ़ाज़ का चुनाव बन्दे को किसी मुसीबत व परेशानी से नजात दिला सकता है और ग़ैर मोह़तात़ अल्फ़ाज़ बन्दे को आज़माइश में भी मुब्तला कर सकते हैं जिसे इस वाक़िए़ से समझा जा सकता है :

बनी इसराईल में बसूस नाम का एक शख़्स था, उसे हुक्म हुवा कि तेरी तीन दुआएं क़बूल होंगी। उस ने अपनी बीवी के लिये बनी इसराईल की सब से ख़ूब सूरत औ़रत बन जाने की दुआ की, उस की बीवी बनी इसराईल की ख़ूब सूरत तरीन औ़रत बन गई मगर ख़ूब सूरती के ग़ुरूर ने बीवी को

शोहर का ना फ़रमान बना दिया। तंग आ कर बसूस ने उसे भोंकने वाली कुतया बन जाने की बद दुआ दी, येह भी फ़ौरन क़बूल हुई और वोह कुतया बन गई। बसूस के बेटों ने अपनी मां की ह़ालत देख कर बाप से सिफ़ारिश की तो उस ने दुआ की : इलाही ! इसे पहले वाली शक्लो सूरत अ़ता कर दे। येह दुआ भी क़बूल हुई और उसे पहले जैसी सूरत अ़ता कर दी गई। यूं बसूस ने लफ़्ज़ों का ग़लत़ इन्तिख़ाब कर के क़बूलिय्यत से सरफ़राज़ होने वाली तीन दुआएं ज़ाएअ़ कर दीं।[1]

उ़लमाए किराम كَثَّرَهُمُ اللهُ السَّلَام ने दुआ के कुछ आदाब बयान फ़रमाए हैं : ❁ बा त़हारत हो ❁ क़िब्ले की जानिब रुख़ हो ❁ मुकम्मल तवज्जोह के साथ दुआ करे ❁ दुआ के अव्वलो आख़िर नबिये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद पढ़े ❁ हाथों को आस्मान की त़रफ़ उठाए और अपनी दुआ में मुसलमानों को भी शामिल करे ❁ क़बूलिय्यते दुआ के लम्ह़ात मसलन जुमुआ़ के दिन ख़ुत़बे के वक़्त[2], बारिश बरसते हुए, इफ़्त़ार के वक़्त, रात के तिहाई पहर और ख़त्मे कुरआन की मजलिस वग़ैरा का लिह़ाज़ करे।[3]

दुआ में हाथ उठाने का त़रीक़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा इस्माईल ह़क़्क़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : अफ़्ज़ल येह है कि दुआ में दोनों हाथों को फैलाए और उन के दरमियान

مدینہ

1 ..... تفسیر بغوی، پ۹، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۷۵، ۲/۱۸۰

2 .....अफ़्ज़ल येह है कि दोनों ख़ुत़बों के दरमियान बिग़ैर हाथ उठाए, बिला ज़बान हिलाए दिल में दुआ मांगी जाए। (नमाज़ के अह़काम, स. 412 मक्तबतुल मदीना बाबुल मदीना कराची)

3 .....روح المعانی، پ۸، الاعراف، تحت الآیۃ: ۵۵، ۸/۵۲۷ ملتقطاً

फ़ासिला रखे अगर्चे क़लील हो। एक हाथ को दूसरे पर न चढ़ाए।[1]

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه दुआ शुरूअ़ करवाने से पहले हाथ उठाने के आदाब इस त़रह़ बयान फ़रमाते हैं : दुआ के आदाब में से है कि जब भी दुआ मांगें तो निगाहें नीची रखें वरना नज़र कमज़ोर हो जाने का अन्देशा है। दुआ के लिये दोनों हाथ इस त़रह़ उठाएं कि सीने की सीध में रहें...कन्धों की सीध में...चेहरे की सीध में...या इतने बुलन्द हो जाएं कि बग़ल की सफ़ेदी नज़र आ जाए...चारों सूरतों में हथेलियां आस्मान की त़रफ़ फैली हुई रखें कि दुआ का क़िब्ला आस्मान है।[2]

किन बातों की दुआ करना मन्अ़ है ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुआ करने वाले को येह भी इ़ल्म होना चाहिये कि **अल्लाह** करीम की बारगाह से क्या मांगना है और किस त़रह़ मांगना है ? बसा अवक़ात मम्नूअ़ व नाजाइज़ चीज़ों की दुआ मांगी जा रही होती है और कभी दुआ तो जाइज़ चीज़ों के मुतअ़ल्लिक़ होती है मगर अल्फ़ाज़ ऐसे इस्ति'माल किये जाते हैं जो **अल्लाह** पाक की शान के लाइक़ नहीं होते और कभी आ़फ़िय्यत मांगने के बजाए आफ़त मांगी जा रही होती है जैसा कि नबिये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक दुआ मांगने वाले शख़्स को येह कहते सुना : "इलाही ! मैं तुझ से सब्र मांगता हूं।" फ़रमाया : "तू आफ़त मांग रहा है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से आ़फ़िय्यत मांग।"[3]

مدینہ

1 ..... روح البیان، پ۸، الاعراف، تحت الآیۃ: ۵۵، ۳/۱۷۸ ملتقطاً

2 ..... फ़ज़ाइले दुआ, स. 67-75 मुलख़्ख़सन, मक्तबतुल मदीना बाबुल मदीना कराची

3 ..... ترمذی، کتاب الدعوات، باب (ت: ...)، ۵/۳۱۲، حدیث: ۳۵۳۸

इस ह़दीसे पाक के तह़्त मश्हूर मुफ़स्सिर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : मा'लूम हुवा कि दुआ़ के अल्फ़ाज़ भी अच्छे चाहियें और निय्यत भी आ'ला, वहां लफ़्ज़ के साथ निय्यत भी देखी जाती है।(1)

आज़माइश मत मांगिये

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने एक बीमारी में यूं दुआ़ की : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! अगर तेरी रिज़ा इसी में है तो इस बीमारी में इज़ाफ़ा कर दे। येह दुआ़ सुन कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के उस्ताद ह़ज़रते इमाम मुस्लिम बिन ख़ालिद ज़ंजी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : ऐ मुह़म्मद ! रुक जाओ, **अल्लाह** पाक से सिह़्ह़त का सुवाल करो मैं और तुम आज़माइश (बरदाश्त करने) वाले लोगों में से नहीं हैं।(2)

जिन बातों की दुआ़ करना मन्अ़ है, इन से मुतअ़ल्लिक़ दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की किताब **''फ़ज़ाइले दुआ़''** से चन्द मदनी फूल पेशे ख़िदमत हैं :

1. दुआ़ में ह़द से न बढ़े जैसे अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का मर्तबा मांगना या आस्मान पर चढ़ने की तमन्ना करना नीज़ दोनों जहां की **सारी** भलाइयां और सब की सब ख़ूबियां मांगना भी मन्अ़ है कि इन ख़ूबियों में मरातिबे अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام भी हैं जो नहीं मिल सकते। लिहाज़ा यूं नहीं कह सकते कि दोनों जहां की **सारी** भलाइयां अ़त़ा फ़रमा। अलबत्ता येह दुआ़ की जा सकती है कि हमें दीनो दुन्या की भलाइयां अ़त़ा फ़रमा।

---

1 ..... मिरआतुल मनाजीह, 4 / 40

2 ..... تنبیہ المغترین، ومن اخلاقھم تمنی الموت اذا خافوا الخ، ص ۴۵ ملخصاً

2. जो मुहाल (या'नी ना मुमकिन) या क़रीब ब मुहाल हो उस की दुआ न मांगे लिहाज़ा हमेशा के लिये तनदुरुस्ती व आफ़िय्यत मांगना कि आदमी उम्र भर कभी किसी त़रह़ की तक्लीफ़ में न पड़े येह मुहाले आ़दी की दुआ मांगना है लिहाज़ा यूं नहीं कह सकते कि "कोई मुसलमान कभी भी बीमार न हो" अलबत्ता येह दुआ की जा सकती है कि हमारे बीमारों को अच्छा कर दे। यूंही लम्बे क़द के आदमी का छोटा क़द होने या छोटी आंख वाले का बड़ी आंख की दुआ करना मम्नूअ़ है कि येह ऐसे अम्र की दुआ है जिस पर क़लम जारी हो चुका है (या'नी इस का फ़ैसला हो चुका है लिहाज़ा अब इस पर सब्र करते हुए दुआ न करे)।

3. गुनाह की दुआ न करे कि मुझे पराया माल मिल जाए कि गुनाह की त़लब करना भी गुनाह है।

4. क़त़्ए रेह़्म (या'नी अ़ज़ीज़ों से तअ़ल्लुक़ तोड़ने) की दुआ न करे, मसलन यूं न कहे : फ़ुलां व फ़ुलां रिश्तेदारों में लड़ाई हो जाए।

5. अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से सिर्फ़ ह़क़ीर चीज़ न मांगे कि परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ग़नी है। मसलन दुन्या ह़क़ीर व ज़लील है, ज़रूरत से ज़ाइद इस की त़लब ना पसन्दीदा है लिहाज़ा दुआ में बस मालो दौलत की कसरत की त़लब करना और आख़िरत की बेहतरी का बिल्कुल भी सुवाल न करना ह़क़ीर चीज़ मांगना है, जिस की मुमानअ़त है।

6. रन्जो मुसीबत से घबरा कर अपने मरने की दुआ न करे कि मुसलमान की ज़िन्दगी उस के ह़क़ में ग़नीमत है, अलबत्ता यूं दुआ की जा सकती है कि "ख़ुदाया ! मुझे ज़िन्दा रख जब तक ज़िन्दगी मेरे ह़क़ में बेहतर है और मुझे वफ़ात दे, जिस वक़्त मौत मेरे ह़क़ में बेहतर हो", लिहाज़ा येह दुआ नहीं कर सकते कि "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! अब तो मसाइबो आलाम (तक्लीफ़ों) ने कमर

तोड़ डाली, सब्र का पैमाना भी जवाब दे गया लिहाज़ा ऐ मौला ! अब मौत दे कर इन तकालीफ़ से छुटकारा दे दे।''

7. बे ग़रज़े शरई (शरई इजाज़त के बिग़ैर) किसी के मरने और ख़राबी (बरबादी) की दुआ न करे, अलबत्ता अगर किसी काफ़िर के ईमान न लाने पर यक़ीन या ज़न्ने ग़ालिब हो और (उस के) जीने से दीन का नुक़्सान हो या किसी ज़ालिम से तौबा और ज़ुल्म छोड़ने की उम्मीद न हो और उस का मरना, तबाह होना मख़्लूक़ के हक़ में मुफ़ीद हो तो ऐसे शख़्स पर बद दुआ करना दुरुस्त है।

8. किसी मुसलमान को येह बद दुआ न दे कि ''तू काफ़िर हो जाए'' कि बा'ज़ उलमा के नज़दीक (ऐसी दुआ मांगना) कुफ़्र है और तह़क़ीक़ येह है कि अगर कुफ़्र को अच्छा या इस्लाम को बुरा जान कर कहे तो बेशक कुफ़्र है वरना बड़ा गुनाह है कि मुसलमान की बद ख़्वाही (या'नी बुरा चाहना) ह़राम है, ख़ुसूसन येह बद ख़्वाही (कि फ़ुलां का ईमान बरबाद हो जाए) तो सब बद ख़्वाहियों से बदतर है।

9. किसी मुसलमान पर ला'नत न करे और उसे मर्दूद व मलऊ़न (ला'नत किया गया) न कहे और जिस काफ़िर का कुफ़्र पर मरना यक़ीनी नहीं उस पर भी नाम ले कर ला'नत न करे। यूंही मच्छर, हवा, जमादात (या'नी बे जान चीज़ों पथ्थर, लोहा वग़ैरा) और ह़ैवानात पर ला'नत मम्नूअ़ है। अलबत्ता बिच्छू वग़ैरा बा'ज़ जानवरों पर ह़दीसे पाक में ला'नत आई है।

10. किसी मुसलमान को येह बद दुआ न दे कि ''तुझ पर ख़ुदा का ग़ज़ब नाज़िल हो और तू (भाड़) आग या दोज़ख़ में दाख़िल हो'' कि ह़दीस शरीफ़ में इस की मुमानअ़त वारिद है (या'नी ह़दीसे पाक में इस क़िस्म की दुआ से मन्अ़ किया गया है)।

11. जो काफ़िर मरा, उस के लिये दुआए मग़फ़िरत ह़राम व कुफ़्र है।

12. येह दुआ करना : ''ख़ुदाया ! सब मुसलमानों के सब गुनाह बख़्श दे।'' जाइज़ नहीं कि इस में उन अह़ादीसे मुबारका की तक्ज़ीब (झुटलाना) है जिन में बा'ज़ मुसलमानों का दोज़ख़ में जाना वारिद हुवा, अलबत्ता यूं दुआ करना ''सारी उम्मते मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मग़फ़िरत (या'नी बख़्शिश) हो या सारे मुसलमानों की मग़फ़िरत हो, जाइज़ है।'' दोनों दुआओं में फ़र्क़ येह है कि पहली दुआ (या'नी सब मुसलमानों के सब गुनाह बख़्श दिये जाएं इस) से लाज़िम आता है कि कोई भी मुसलमान एक लम्ह़े के लिये भी दोज़ख़ में न जाए ह़ालांकि बा'ज़ मुसलमानों का अपने गुनाहों के सबब दोज़ख़ में जाना तै़ शुदा है लिहाज़ा इन अल्फ़ाज़ से दुआ नहीं मांग सकते जब कि दूसरी दुआ (सारी उम्मते मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मग़फ़िरत (या'नी बख़्शिश) हो या सारे मुसलमानों की मग़फ़िरत हो) में येह क़बाह़त (बुराई) नहीं क्यूंकि इस में फ़क़त़ सारे मुसलमानों के लिये मग़फ़िरत मांगी गई है और येह तो अह़ादीस से साबित है कि जहन्नम में जाने वाले मुसलमानों की भी बिल आख़िर मग़फ़िरत कर दी जाएगी और उन्हें दोज़ख़ से निकाल कर जन्नत में दाख़िल किया जाएगा।

13. अपने लिये और अपने दोस्त अह़बाब, अह्लो माल और औलाद के लिये बद दुआ न करे, क्या मा'लूम कि क़बूलिय्यत का वक़्त हो और बद दुआ का असर ज़ाहिर होने पर नदामत (शरमिन्दगी) हो।

14. जो चीज़ ह़ासिल (या'नी अपने पास) हो उस की दुआ न करे मसलन मर्द यूं न कहे ''या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे मर्द कर दे'' कि इस्तिह़्ज़ा (मज़ाक़ बनाना) है अलबत्ता ऐसी दुआ जिस में शरीअ़त के ह़ुक्म की ता'मील (या'नी शरई ह़ुक्म पर

अ़मल करना) या आ़जिज़ी व बन्दगी का इज़हार या परवर दगार عَزَّوَجَلَّ और मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से महब्बत या दीन या अहले दीन की त़रफ़ रग़बत या कुफ़्रो काफ़िरीन से नफ़रत वग़ैरा के फ़वाइद निकलते हों, वोह जाइज़ है अगर्चे इस अम्र का हुसूल यक़ीनी हो जैसे दुरूद शरीफ़ पढ़ना, (हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये मक़ामे) वसीला की दुआ़ करना, (मुसलमान होने के बा वुजूद अपने लिये) सिराते मुस्तक़ीम (सीधे रास्ते) की, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दुश्मनों पर ग़ज़ब व ला'नत की दुआ़ करना।[1]

अल्लाह तआ़ला को किन नामों से पुकारना मन्अ़ है?

दुआ़ मांगने वाले को येह भी मा'लूम होना चाहिये कि किन नामों के साथ **अल्लाह** पाक को पुकार सकते हैं और किन के साथ नहीं? **अल्लाह** करीम का फ़रमाने आ़लीशान है:

﴿وَ لِلّٰهِ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ بِهَا ۪ وَ ذَرُوا الَّذِیْنَ یُلْحِدُوْنَ فِیْۤ اَسْمَآىٕهٖ﴾ (پ۹،الاعراف:۱۸۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान: "और **अल्लाह** ही के हैं बहुत अच्छे नाम तो उसे इन से पुकारो और उन्हें छोड़ दो जो उस के नामों में ह़क़ से निकलते हैं।"

अल्लाह तआ़ला के नामों में ह़क़ व इस्तिक़ामत से दूर होना कई त़रह़ से है। **एक** तो येह है कि उस के नामों को कुछ बिगाड़ कर ग़ैरों पर इत़लाक़ करना, जैसा कि मुश्रिकीन ने इलाह का "लात" और अ़ज़ीज़ का "उ़ज़्ज़ा" और मन्नान का "मनात" कर के अपने बुतों के नाम रखे थे, येह नामों में ह़क़ से तजावुज़ और नाजाइज़ है। **दूसरा** येह कि **अल्लाह** तआ़ला के लिये ऐसा नाम मुक़र्रर किया

1 ..... फ़ज़ाइले दुआ़, स. 172 ता 215 माख़ूज़न मक्तबतुल मदीना बाबुल मदीना कराची

जाए जो कुरआनो ह़दीस में न आया हो येह भी जाइज़ नहीं जैसे कि **अल्लाह** तआ़ला को सख़ी कहना क्यूंकि **अल्लाह** तआ़ला के अस्माए तौक़ीफ़िया (या'नी शरीअ़त की त़रफ़ से मुक़र्रर कर्दा) हैं। **तीसरा** येह कि हुस्ने अदब की रिआ़यत न करना। **चौथा** येह कि **अल्लाह** तआ़ला के लिये कोई ऐसा नाम मुक़र्रर किया जाए जिस के मा'ना फ़ासिद हों येह भी बहुत सख़्त नाजाइज़ है, जैसे कि लफ़्ज़ राम (या'नी हर चीज़ में रमा हुवा, हर शै में ह़ुलूल किया हुवा) और परमात्मा (हिन्दुओं के तीन देवताओं ब्रह्मा, विश्नु और शिव का मुश्तरका नाम) वग़ैरा। **पांचवां** येह कि ऐसे अस्मा का इत़लाक़ करना जिन के मा'ना मा'लूम नहीं हैं और येह नहीं जाना जा सकता कि वोह जलाले इलाही के लाइक़ हैं या नहीं।[1]

मश्हूर मुफ़स्सिर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : **अल्लाह** तआ़ला के नाम तौक़ीफ़ी हैं कि शरीअ़त ने जो बताए, उन ही नामों से पुकारा जाए अपनी त़रफ़ से नाम ईजाद न किये जाएं अगर्चे तर्जमा उन का सह़ीह़ हो लिहाज़ा रब को **आ़लिम** कह सकते हैं, **आ़क़िल** नहीं कह सकते, उसे **जव्वाद** कहेंगे न कि **सख़ी**, **ह़कीम** कहेंगे न कि **त़बीब**। **ख़ुदा** रब का नाम नहीं बल्कि एक सिफ़त या'नी **मालिक** का तर्जमा है जैसे परवर दगार, पालनहार, बख़्शने वाला वग़ैरा।[2] जिन अल्फ़ाज़ के साथ **अल्लाह** पाक को नहीं पुकार सकते, उन में से चन्द मुलाह़ज़ा कीजिये :

ऐ ह़ाज़िर ! ऐ नाज़िर ! न कहें

अल्लाह पाक को ह़ाज़िरो नाज़िर कहने की मुमानअ़त है चुनान्चे, फ़तावा रज़विय्या में है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ शहीद व बसीर है, उसे ह़ाज़िरो नाज़िर

1 ..... सिरातुल जिनान, 3 / 480 ता 481

2 ..... मिरआतुल मनाजीह़, 3 / 325

न कहना चाहिये यहां तक कि बा'ज़ उ़लमा ने इस पर तक्फ़ीर (या'नी हुक्मे कुफ़्र लगाने) का ख़याल फ़रमाया और अकाबिर (या'नी बड़े उ़लमाए किराम) को इस की नफ़ी की ह़ाजत हुई, मजमूआ़ अ़ल्लामा इब्ने वह्बान में है : "یَاحَاضِرُ یَانَاظِرُ لَیْسَ بِکُفْرٍ या'नी ऐ ह़ाज़िर ! ऐ नाज़िर ! कहना कुफ़्र नहीं है।" जो ऐसा करता है, ख़ता करता है, बचना चाहिये।[1] लिहाज़ा हमें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को **ह़ाज़िरो नाज़िर** कहने के बजाए **समीओ़ बसीर** कहना चाहिये।

इस त़रह़ के जुम्लों से लाज़िमी बचिये

"**ऐ** ऊपर वाले ! हमारी फ़रियाद सुन ले !" दुआ़ में और दुआ़ के इ़लावा भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये येह कलिमात कहने की इजाज़त नहीं।

इसी त़रह़ दुआ़ में यूं कहने से भी बचिये : "ऐ आस्मान से देखने वाले ! हमारी फ़रियाद सुन ले।" अलबत्ता यूं कहने में ह़रज नहीं कि "ऐ हमारे दिलों पर नज़र रखने वाले ! हमारी फ़रियाद सुन ले।"

दुआ़ में हाथ आस्मान की त़रफ़ उठाए जाते हैं कि दुआ़ का क़िब्ला आस्मान है लिहाज़ा हाथ बुलन्द करते हुए ऐसे अल्फ़ाज़ कहना ह़राम है कि ऐ अ़र्श पे रहने वाले ! हम ने तेरी त़रफ़ हाथ उठा दिये हैं अलबत्ता यूं कहने में ह़रज नहीं : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम ने तेरी बारगाह में हाथ उठा दिये हैं।

ऊपर मन्अ़ कर्दा जुम्लों से **अल्लाह** पाक के लिये सम्त (Direction) का सुबूत होता है और उस की ज़ात जिहत से पाक है। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा सा'दुद्दीन तफ़्ताज़ानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मकान में होने से पाक है और जब वोह मकान में होने से पाक है तो जिहत (या'नी

1..... फ़तावा रज़विय्या, 14 / 688-689

सम्त) से भी पाक है। (इसी त़रह़) ऊपर और नीचे होने से भी पाक है।[1] ह़ज़रते अ़ल्लामा इब्ने नजीम मिसरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی नक़्ल फ़रमाते हैं : जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को ऊपर या नीचे क़रार दे तो उस पर हुक्मे कुफ़्र लगाया जाएगा।[2] लेकिन अगर कोई शख़्स येह जुम्ला बुलन्दी व बरतरी के मा'ना में इस्ति'माल करे तो क़ाइल पर हुक्मे कुफ़्र न करेंगे मगर इस क़ौल को बुरा ही कहेंगे और क़ाइल को इस से रोकेंगे।[3] सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये मकान साबित करना कुफ़्र है कि वोह मकान से पाक है, येह कहना कि "ऊपर ख़ुदा है नीचे तुम" येह कलिमए कुफ़्र है।[4]

तुझे तेरे सरकार का वासित़ा ! न कहें

दुआ़ में अल्फ़ाज़ का तकरार मुकम्मल एह़तियात़ के साथ कीजिये क्यूं कि मा'मूली सी ग़लत़ी भी बहुत ख़त़रनाक हो सकती है मसलन ऐ अल्लाह पाक ! तुझे तेरे मह़बूब का वासित़ा ! तुझे तेरे ह़बीब का वासित़ा ! तुझे तेरे नबी का वासित़ा ! तुझे हमारे सरकार का वासित़ा ! तुझे हमारे आक़ा का वासित़ा ! हमारी बख़्शिश कर दे... अब अगर यहां बे ख़याली हुई तो ज़बान की तेज़ी के बाइ़स "तेरे तेरे" की तकरार में येह अल्फ़ाज़ भी निकल सकते हैं : "ऐ अल्लाह पाक ! तुझे तेरे सरकार का वासित़ा ! तुझे तेरे आक़ा का वासित़ा !" यूंही येह अल्फ़ाज़ भी बे तवज्जोही के सबब ज़बान पर आ सकते हैं : "ऐ अल्लाह !

1 ...... شرح العقائد، ولا یتمکن فی مکان، ص ۱۳۱ ملتقطاً

2 ...... بحر الرائق، کتاب السیر، باب احکام المرتدین، ۵/۲۰۳ ماخوذاً

3 ...... फ़तावा फ़ैज़ुर्रसूल, 1 / 3

4 ...... बहारे शरीअ़त, 2 / 462

अपने आक़ा का जन्नत में पड़ोस नसीब फ़रमा।" वग़ैरा। लिहाज़ा एह़तियात़ करते हुए इन सब से बचना ज़रूरी है।

तू बख़्शने पर आए तो मुश्रिक भी बख़्शा जाए ! न कहें

दुआ में **अल्लाह** पाक की वसीअ़ रह़मत का तज़किरा करते हुए बे तवज्जोही की बिना पर इस त़रह़ के अल्फ़ाज़ भी निकल सकते हैं : "ऐ **अल्लाह** ! तू ग़फ़्फ़ार है, तू रह़मान है, तू रह़ीम है, मौला ! **तू बख़्शने पर आए तो काफ़िर व मुश्रिक को भी बख़्श दे,** मौला ! हम तो मुसलमान हैं तेरे मह़बूब के उम्मती हैं, मौला ! हमारे गुनाह बख़्श दे।" इन अल्फ़ाज़ में "येह कहना कि "**अल्लाह तआ़ला बख़्शने पर आए तो काफ़िर व मुश्रिक को भी बख़्श दे**" कलिमए कुफ़्र है (कि **अल्लाह** तआ़ला ने इस का फ़ैसला फ़रमा दिया है कि जो कुफ़्र की ह़ालत में मरा, उस की बख़्शिश न फ़रमाएगा)।"[1] जैसा कि पारह 5 **सूरतुन्निसा** की आयत नम्बर 48 में इरशाद है :

﴿اِنَّ اللّٰهَ لَا یَغْفِرُ اَنْ یُّشْرَكَ بِهٖ وَ یَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ یَّشَآءُ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इमान : बेशक **अल्लाह** उसे नहीं बख़्शता कि उस के साथ कुफ़्र किया जाए और कुफ़्र से नीचे जो कुछ है जिसे चाहे मुआ़फ़ फ़रमा देता है।

ऐ सख़ी ! सख़ावत कर दे ! न कहें

अल्लाह पाक के लिये "सख़ी" का लफ़्ज़ इस्ति'माल करने की बजाए "जव्वाद" का लफ़्ज़ इस्ति'माल कीजिये कि मश्हूर मुफ़स्सिर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : मुह़ावरए अ़रब में उ़मूमन "सख़ी" उसे कहते हैं जो ख़ुद भी खाए और दूसरों को भी खिलाए।

1..... ईमान की ह़िफ़ाज़त, स. 73

"जव्वाद" वोह जो ख़ुद न खाए, औरों को खिलाए। इसी लिए **अल्लाह** तआ़ला को "सख़ी" नहीं कहा जाता।[1] पारह 7 **सूरतुल अन्आ़म** की आयत नम्बर 14 में **अल्लाह** पाक का फ़रमाने आ़लीशान है : ﴿وَهُوَ يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ﴾ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और वोह खिलाता है और खाने से पाक है।

तू हमें मत भूल जाना ! न कहें

बा'ज़ अवक़ात दुआ़ करने वाला जज़्बात में ऐसे अल्फ़ाज़ कह देता है कि "**या अल्लाह ! हम तुझे भूल गए मगर तू हमें न भूल जाना**" येह जुम्ला कुफ़्रिय्या है इस लिये कि **अल्लाह** पाक भूल जाने से पाक है और हर वोह बात जिस में **अल्लाह** पाक की त़रफ़ भूल जाना साबित किया जाए ख़ालिस कुफ़्र है चुनान्चे पारह 16 सूरए **त़ाहा** की आयत नम्बर 52 में इरशाद होता है : ﴿لَا يَضِلُّ رَبِّيْ وَلَا يَنْسَى﴾ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** मेरा रब न बहके न भूले।

अपने फ़ारिग़ अवक़ात में हमारी दुआ़ सुन ले ! न कहें

अल्लाह करीम फ़राग़त व मसरूफ़िय्यत से पाक है लिहाज़ा दुआ़ में ऐसे अल्फ़ाज़ इस्ति'माल न करना फ़र्ज़ है, जिन से उस के लिये येह मज़मूम (बुरा) वस्फ़ निकलता हो। मसलन यूं कहना : "ऐ **अल्लाह** ! हम सुब्ह़ सुब्ह़ या रात के आख़िरी पहर में तुझ से दुआ़ कर रहे हैं **जो तेरी भी फ़राग़त का वक़्त होगा** लिहाज़ा हमारी सारी ह़ाजात पर नज़र फ़रमा ले।" बा'ज़ नादान दूसरों को सुब्ह़ सुब्ह़ दुआ़ मांगने की तरग़ीब दिलाते हुए इस त़रह़ का जुम्ला कह देते हैं कि "**सुब्ह़ सुब्ह़ दुआ़ मांग लिया करो उस वक़्त अल्लाह फ़ारिग़ होता है।**" येह कुफ़्रिय्या जुम्ला है चुनान्चे, मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ किताब

1 ..... मिरआतुल मनाजीह़, 1 / 221

"ईमान की हिफ़ाज़त" के सफ़हा 31 पर है : **येह कहना कि सुब्ह सुब्ह दुआ मांग लिया करो, उस वक़्त अल्लाह फ़ारिग़ होता है कुफ़्र है ।**

मुझ पर तंगदस्ती डाल कर ज़ुल्म न कर ! न कहें

अल्लाह पाक की त़रफ़ ज़ुल्म की निस्बत करना, उसे ज़ालिम कहना कुफ़्र है लिहाज़ा दुआ में यूं कहना कि "**ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मुझे रिज़्क़ दे और मुझ पर तंगदस्ती डाल कर ज़ुल्म न कर ।**" कुफ़्र है ।[1] **अल्लाह** पाक इरशाद फ़रमाता है : ﴿اِنَّ اللّٰهَ لَا یَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ﴾ (پ۵، النسآء:۴۰) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** **अल्लाह** एक ज़र्रा भर ज़ुल्म नहीं फ़रमाता ।

ऐ अल्लाह मियां ! न कहें

अल्लाह पाक के लिये "मियां" का लफ़्ज़ बोलना मम्नूअ़ है । **अल्लाह** पाक, **अल्लाह** तआ़ला, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और **अल्लाह** तबारक व तआ़ला वग़ैरा बोलना चाहिये । आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : (**अल्लाह** तआ़ला के लिये) मियां का इत़लाक़ न किया जाए (या'नी न बोला जाए) कि वोह तीन मा'ना रखता है, इन में दो (मा'ना) रब्बुल इ़ज़्ज़त के लिये मुह़ाल (या'नी ना मुमकिन) हैं । मियां (के तीन मा'ना येह हैं) "**आक़ा** और **शोहर** और मर्द व औरत में ज़िना का **दलाल**" लिहाज़ा इत़लाक़ मम्नूअ़ (या'नी इस लिये **अल्लाह** तआ़ला को मियां कहना मन्अ़ है) ।[2]

तलफ़्फ़ुज़ और ए'राब की दुरुस्ती

दुआ में तलफ़्फ़ुज़ व ए'राब की दुरुस्ती का ख़ास ख़याल रखें बिल

---

1 ..... कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 133

2 ..... फ़तावा रज़विय्या, 14 / 614

ख़ुसूस क़ुरआनी दुआ़ओं, आयते दुरूद व इख़्तितामे दुआ़ की आयात में तजवीद के क़वाइ़द का ख़याल रखा जाए। क़ुरआनी दुआ़एं किसी क़ारी या आ़लिम साहिब को सुना कर चेक करवा लीजिये।

दुआ़ में ख़िलाफ़े शरअ़ अश्आ़र से इजतिनाब कीजिये

अगर दुआ़ में अश्आ़र पढ़ना चाहें तो मुस्तनद उ़लमाए किराम के ही अश्आ़र पढ़िये, इस लिये कि ग़ैर मोह़तात़ और जाहिल शुअ़रा के बा'ज़ अश्आ़र ख़िलाफ़े शरअ़ बल्कि कुफ़्रिय्यात पर भी मब्नी होते हैं।

सोच समझ कर मांगिये

ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام एक दिन एक ऐसी लाश के पास से गुज़रे जिस के पेट को दरिन्दों ने फाड़ कर उस का गोश्त नोच लिया था। ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने उसे पहचान कर **अल्लाह** करीम की बारगाह में अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब ! येह तो तेरा इत़ाअ़त गुज़ार था, तो येह मैं क्या देख रहा हूं ? **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام की त़रफ़ वह़ी भेजी : ऐ मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ! इस शख़्स ने मुझ से ऐसे मर्तबे की दुआ़ की जिस तक येह अपने आ'माल के ज़रीए़ तो नहीं पहुंच सका, मैं ने इसे इस तक्लीफ़ में मुब्तला कर दिया ताकि उस दर्जे तक पहुंच जाए।[1]

दुआ़ में ग़ैर मोह़तात़ जुम्लों की 18 मिसालें

दुआ़ में ग़ैर मोह़तात़ जुम्लों से परहेज़ कीजिये। ग़ैर मोह़तात़ जुम्लों की 18 मिसालें मअ़ दुरुस्त जुम्लों के मुलाह़ज़ा कीजिये :

1 ..... تنبیہ المغترین، ومن اخلاقھم کثرۃ الصبر علی البلایا والنوازل الخ، ص ۷۳

ग़ैर मोहतात जुम्ले	मोहतात जुम्ले
ऐ **अल्लाह** पाक ! जितने मुसलमान तेरी बारगाह में तशरीफ़ लाए हुए हैं, इन की फ़रियाद सुन ले !	ऐ **अल्लाह** पाक ! जितने मुसलमान तेरी बारगाह में हाज़िर हैं, इन सब की फ़रियाद सुन ले !
ऐ **अल्लाह** ! अगर क़ब्र में हमें सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत न हुई तो हम बरबाद हो जाएंगे ।	ऐ **अल्लाह** ! अगर क़ब्र में सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत के वक़्त हमें पहचान नसीब न हुई तो हम बरबाद हो जाएंगे ! ऐ **अल्लाह** ! हमें पहचान नसीब फ़रमा ।
ऐ 70 माओं से बढ़ कर ममता रखने वाले !	ऐ मां से बढ़ कर महब्बत फ़रमाने वाले !
हम ने सुन रखा है कि दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों या हफ़्तावार इजतिमाअ़ में दुआएं क़बूल होती हैं ।	हमारा हुस्ने ज़न है कि आशिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में या सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त में मांगी जाने वाली दुआएं क़बूल होती हैं ।
फ़िशारे क़ब्र (क़ब्र के दबाने) से बचा ।	ऐ **अल्लाह** पाक ! क़ब्र का दबाना हक़ है, हमारी क़ब्र हमें ऐसे दबाए कि जैसे मां अपने बच्चे को सीने से लगा कर दबाती है । हमारी क़ब्र हमें इस तरह न दबाए कि हमारी पस्लियां टूट फूट कर एक दूसरे में पैवस्त हो जाएं ।

ऐ **अल्लाह** ! अमीरे अह्ले सुन्नत और मशाइख़े अह्ले सुन्नत का साया हमारे सरों पर क़ाइमो दाइम फ़रमा ।	ऐ **अल्लाह** ! अमीरे अह्ले सुन्नत और तमाम मशाइख़े अह्ले सुन्नत का सायए आ़तिफ़त हमारे सरों पर दराज़ फ़रमा ।
तुझे तेरी रह़मत का सदक़ा ।	तुझे तेरी रह़मत का वासिता़ ।
सकरात की ह़ालत से बचाना ।	सकरात की तकालीफ़ से बचाना ।
ऐ **अल्लाह** पाक ! अगर तू ने भी हमें छोड़ दिया तो हम कहां जाएंगे ?	ऐ **अल्लाह** पाक ! अगर तू ने हम पर नज़रे रह़मत न फ़रमाई तो हम कहां जाएंगे ?
ऐ **अल्लाह** पाक ! हमें अपने क़दमों से दूर न करना ।	ऐ **अल्लाह** पाक ! हमें अपनी रह़मत से मह़रूम न फ़रमाना (याद रहे ! **अल्लाह** तआ़ला हाथ पाउं से पाक है) ।
ऐ **अल्लाह** पाक ! तुझे तो इन बीमारों, मजबूरों, क़र्ज़दारों और कमज़ोरों पर तरस आना चाहिये (इस जुम्ले में शिकायत के मा'ना पाए जा रहे हैं । जो कुफ़्र है) ।	ऐ **अल्लाह** पाक ! इन बीमारों, मजबूरों, क़र्ज़दारों और कमज़ोरों पर रह़मत की नज़र फ़रमा ।
ऐ **अल्लाह** ! तमाम मुसलमानों की बिला ह़िसाब मग़फ़िरत फ़रमा ।	ऐ **अल्लाह** ! तमाम मुसलमानों की मग़फ़िरत फ़रमा ।

ऐ **अल्लाह** ! हमारी तमाम ख़्वाहिशात को पूरा फ़रमा ।	ऐ **अल्लाह** ! हमारी नेक और जाइज़ ख़्वाहिशात पर रह़मत की नज़र फ़रमा ।
ऐ **अल्लाह** ! बीमारों को शिफ़ाए कामिला व दाइमा अ़ता फ़रमा ।	ऐ **अल्लाह** ! बीमारों को शिफ़ाए कामिला आ़जिला अ़ता फ़रमा ।
ऐ **अल्लाह** ! हमें मुसीबतों पर सब्र अ़ता फ़रमा ।	ऐ **अल्लाह** ! हमें मुसीबतों से मह़फ़ूज़ फ़रमा और आ़फ़िय्यत अ़ता फ़रमा ।
ऐ **अल्लाह** ! हमें हमेशा के लिये तनदुरुस्ती अ़ता फ़रमा ।	ऐ **अल्लाह** ! हमें ख़ैरो आ़फ़िय्यत वाली ज़िन्दगी अ़ता फ़रमा ।
ऐ **अल्लाह** ! हमें दोनों जहानों की सब भलाइयां अ़ता फ़रमा ।	ऐ **अल्लाह** ! हमें दुन्या व आख़िरत की भलाइयां नसीब फ़रमा ।
ऐ **अल्लाह** ! हमें छोटे बड़े तमाम अमराज़ से मह़फ़ूज़ फ़रमा ।	ऐ **अल्लाह** ! हमें मूज़ी अमराज़ से मह़फ़ूज़ फ़रमा ।

हुसूले बरकत के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मुख़्तलिफ़ मवाक़ेअ़ पर मांगी जाने वाली चन्द दुआएं मुलाह़ज़ा कीजिये :

अमीरे अहले सुन्नत की दुआएं

(मुख़्तसर व तरमीम शुदा)

सहराए मदीना (मदीनतुल औलिया मुल्तान शरीफ़) की दुआ

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط

या रब्बल मुस्त़फ़ा...! या रब्बल अम्बिया...! या रब्बस्सह़ाबा...! या रब्बत्ताबेईन...! या रब्बल औलिया...! ऐ हमारे इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा के रब...! ऐ हमारे इमाम शाफ़ेई के रब...! ऐ हमारे इमाम अह़मद बिन ह़म्बल के रब...! ऐ हमारे इमाम मालिक के रब...! ऐ हमारे ग़ौसुल आ'ज़म के मालिक...! ऐ हमारे ग़रीब नवाज़ को नवाज़ने वाले...! ऐ हमारे दाता अ़ली हजवेरी के मौला...! ऐ हमारे बहाउद्दीन ज़करिय्या मुल्तानी के रब्बुल आ़लमीन...! ऐ हमारे शाह रुकने आ़लम के रब्बे लम यज़ल...! ऐ औलियाए किराम के परवर दगार...! ऐ हम गुनाहगारों को बख़्शने वाले...! ऐ मरीज़ों को शिफ़ा देने वाले...! ऐ बेकसों की दस्त्गीरी फ़रमाने वाले...! ऐ डूबतों को निकालने वाले...! ऐ गिरतों को संभालने वाले...! ऐ सारी काएनात को पालने वाले...! ऐ हम ज़लीलों के सरों पर इ़ज़्ज़त का ताज सजाने वाले...!

तेरे गुनाहगार, सियाहकार बन्दों ने तेरी बारगाह से रह़मत की भीक लेने के लिये गुनाहों से भरे हाथ दराज़ कर दिये हैं...ऐ मौला ! हम ए'तिराफ़ करते हैं कि गुनाहों से हम ने ज़मीन को भर दिया है...ऐ **अल्लाह** ! हमारे आ'माल नामे की सियाही रात के अंधेरे को शर्मा रही है...ऐ मौला ! नामए आ'माल में दूर दूर तक कोई नेकी नज़र नहीं आती...नमाज़ अदा कर भी लें तो ज़ाहिरी बात़िनी

आदाब से यक्सर ख़ाली होती है...ऐ मौला ! रोज़ा रखा भी तो दिन भर गुनाहों से कनारा न किया...अगर तेरी राह में ख़र्च भी किया तो ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इख़्लास का दूर दूर तक कोई पता नहीं... लेकिन मौलाए करीम ! तू हमारे दिलों के भेद जानता है, हमारा तेरे साथ येह हुस्ने ज़न है कि तू हमारी ज़रूर बख़्शिश कर देगा...ऐ अल्लाह ! उम्र भर तेरे मह़बूब तुझ से हमारी मग़फ़िरत का सुवाल करते रहे...मे'राज की सआदत ह़ासिल हुई, जब भी हमें न भूले... अपनी क़ब्रे मुनव्वर में भी हमें याद फ़रमा रहे हैं[1] और मह़शर में भी मह़बूब हमें याद रखेंगे...कभी पुल सिरात़ के पास सजदे में गिर कर رَبِّ سَلِّمْ اُمَّتِیْ، رَبِّ سَلِّمْ اُمَّتِیْ[2] या'नी "मौला ! मेरी उम्मत को सलामती से गुज़ार" की दुआ कर रहे होंगे...कभी मीज़ाने अ़मल पर तशरीफ़ लाएंगे और अपने करम से हम गुनाहगारों के नेकियों के हल्के पल्ले को भारी बना रहे होंगे। हौज़े कौसर पर अपने गुनाहगार उम्मतियों को भर भर कर जाम पिला रहे होंगे...ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तेरे मह़बूब की येही ख़्वाहिश है कि हम तक्लीफ़ में न पड़ें, हमारा मशक़्क़त में पड़ना रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर गिरां गुज़रता है, ऐ अल्लाह ! मह़बूब की ख़ातिर हमारी मग़फ़िरत कर दे... इलाहुल आ़लमीन ! हम पर जहन्नम की आग ठन्डी कर दे।

ख़ुदाए ग़फ़्फ़ार बख़्श दे अब, लाजे मह़बूब रख ही ले अब

हमारा ग़म ख़्वार फ़िक्रे उम्मत में देख आंसू बहा रहा है

مـــدينـــه

1 ......كنز العمال، كتاب القيامة، باب الشفاعة، الجزء: ١٤، ٧/١٧٨، حديث: ٣٩١٠٨

2 ...... مسلم، كتاب الايمان، ادنى اهل الجنة منزلة فيها، ص ١٠٧، حديث: ٤٨٢ بالفاظ مختلفة

या इलाहल आ़लमीन ! हमारी कमज़ोरी और नातुवानी तुझ पर आश्कार है, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! गर्म मौसिम में दोपहर की धूप हम से बरदाश्त नहीं होती तो मौलाए करीम ! जहन्नम की आग क्यूं कर बरदाश्त हो सकेगी... ऐ **अल्लाह** ! अगर एर कन्डीशन्ड रूम में नर्म नर्म गदेले पर भी कोई मच्छर हमें काट ले तो हम बेचैन हो जाते हैं तो ऐ **अल्लाह** ! अंधेरी क़ब्र में बिच्छू के डंक कैसे बरदाश्त करेंगे !

डंक मच्छर का भी मुझ से तो सहा जाता नहीं क़ब्र में बिच्छू के डंक कैसे सहूंगा या रब
गर तू नाराज़ हुवा तो मेरी हलाकत होगी हाए मैं नारे जहन्नम में जलूंगा या रब
अ़फ़्व कर और सदा के लिये राज़ी हो जा गर करम होगा तो जन्नत में रहूंगा या रब
गर तेरे प्यारे का जल्वा न रहा पेशे नज़र सख़्तियां नज़्अ़ की क्यूं कर मैं सहूंगा या रब
नज़्अ़ के वक़्त मुझे जल्वए महबूब दिखा तेरा क्या जाएगा मैं शाद मरूंगा या रब

ऐ रब्बे बे नियाज़ ! तेरे बेकसो आ़जिज़ बन्दे तेरी बारगाह में अपनी आ़जिज़ी और नियाज़ मन्दी का ए'तिराफ़ करते हैं। ऐ **अल्लाह** ! तेरे आगे कौन क्या छुपा सकता है...या **अल्लाह** ! तू तो दिलों के भेद से वाक़िफ़ है... ऐ मौला ! हम तो इक़्बाले जुर्म कर रहे हैं, दुन्या का दस्तूर है कि इक़्बाले जुर्म करने वाले को सज़ा सुना दी जाती है लेकिन तेरी रह़मत का दस्तूर निराला है, जो तेरे दरबार में गुनाहों का ए'तिराफ़ कर के शर्मसार हो जाए, उस पर तेरी रह़मत जोश में आ जाती है... ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तेरे मह़बूब ने येह भी तेरा इरशाद हम तक पहुंचाया कि तू फ़रमाता है : ''سَبَقَتْ رَحْمَتِیْ غَضَبِیْ या'नी मेरी

रहमत मेरे ग़ज़ब पर हावी है।"[1] तो ऐ अल्लाह ! हम ए'तिराफ़ करते हैं कि हम ने काम तेरे क़ह्रो ग़ज़ब को उभारने वाले किये हैं मगर तेरी रहमत तेरे ग़ज़ब पर हावी है...ऐ मौला ! तुझ से तेरे क़ह्रो ग़ज़ब से अमान चाहते हैं...हमें अपने क़ह्रो ग़ज़ब से महफ़ूज़ कर दे...हम पर अपनी रहमत की चादर उढ़ा दे... महबूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तुफ़ैल हमारी, हमारे मां बाप की और तमाम मुसलमानों की मग़्फ़िरत फ़रमा...

तू ने जब से सुना दिया या रब سَبَقَتْ رَحْمَتِیْ عَلٰی غَضَبِیْ
और मज़बूत हो गया या रब *आसरा हम गुनाहगारों का*

या इलाहल आलमीन ! हम कुफ़्र से नफ़रत करते हैं...ऐ मौला ! हमें इस्लाम से महब्बत है...हम दुन्या की सारी दौलत तर्क कर सकते हैं, हम सब कुछ दे सकते हैं, अपनी जान भी दे सकते हैं, तेरी क़सम हम किसी को ईमान नहीं दे सकते...ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमारे इस जज़्बे को मज़बूत कर दे और हमारा ईमान सलामत रख ले...मौला ! महबूब के जल्वों में मदीनए मुनव्वरा में शहादत नसीब फ़रमा...जन्नतुल बक़ीअ़ हमारा मदफ़न बना...ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमारी क़ब्र को महबूब के जल्वों से आबाद फ़रमाना...इलाहल आलमीन ! महशर में भी महबूब के दामने करम में जगह नसीब करना...महबूब की शफ़ाअ़त नसीब करना...पुल सिरात़ पर आसानी अ़ता करना...ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! जन्नतुल फ़िरदौस में अपने प्यारे हबीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का बिला हिसाबो किताब पड़ोस अ़ता फ़रमाना।

مـــــدینــــہ

1 ...... مسلم، کتاب التوبۃ، باب فی سعۃ رحمۃ اللہ تعالٰی...الخ، ص۱۴۷۹، حدیث:۲۷۵۱

हर वक़्त जहां से कि उन्हें देख सकूं मैं

जन्नत में मुझे ऐसी जगह प्यारे ख़ुदा दे

मौला ! तू बे नियाज़ है, तुझे हमारी इबादत की यक़ीनन ह़ाजत नहीं मगर मौला हमें तेरी इबादत की ह़ाजत है। हम बन्दे हैं, बन्दगी करना चाहते हैं... या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारा दिल नमाज़ों में लगा दे...इलाहल आ़लमीन ! हमें मह़बूब की सुन्नतों का चलता फिरता नमूना बना दे...इलाहल आ़लमीन ! हमें झूट, ग़ीबत, चुग़ली, वा'दा ख़िलाफ़ी, गाली गलोच, बद गुमानी, बद कलामी, बद अख़्लाक़ी, बद निगाही और हर त़रह़ के गुनाहों से मह़फ़ूज़ फ़रमा.. गुनाहों की आ़दतें निकल जाएं...ऐ रब्बे करीम ! तेरी बारगाह में एक ख़ास सुवाल है...ऐ **अल्लाह** ! हमारी ख़ाली झोलियों में इ़श्क़े रसूल की ख़ैरात डाल दे...

या इलाहल आ़लमीन ! यहां तेरे बन्दे दुआ़ के लिये हाथ उठाए हुए हैं, इन में कोई बेचारा रोज़ी की वज्ह से परेशान होगा, ऐ **अल्लाह** ! सब को रिज़्क़े ह़लाल फ़राख़ी के साथ अ़त़ा फ़रमा... क़नाअ़त की दौलत से मालामाल कर दे... इलाहल आ़लमीन ! न जाने कितने बेचारे क़र्ज़दार आए होंगे कि जिन की जान पर बनी होगी, नींदें उड़ी हुई होंगी, ऐ **अल्लाह** ! उन को क़र्ज़ ख़्वाह परेशान कर रहे होंगे, उन बेचारों के ह़ाले ज़ार पर रह़्म करते हुए क़र्ज़ की अदाएगी का ग़ैब से सामान कर दे... मौलाए करीम ! न जाने कितने मरीज़ और उन के नुमायन्दे आए होंगे... ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! बड़ी उम्मीद ले कर आए होंगे...या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तेरे मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का वासित़ा ! उन बीमारों को शिफ़ा अ़त़ा फ़रमा...ऐ मौला ! उन मरीज़ों को यहां से हंसता हुवा उठा...सब की बीमारियां,

तंगदस्तियां, बेरोज़गारियां, क़र्ज़दारियां, बे औलादियां, मुक़द्दमे बाज़ियां और घरेलू नाचाक़ियां दूर कर दे।

या इलाहल आ़लमीन ! दा'वते इस्लामी को दिन ग्यारहवीं रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़ता फ़रमा हमारी मर्कज़ी मजलिसे शूरा के तमाम अराकीन व निगरान, दीगर मजालिस के अराकीन और निगरान, तमाम मुबल्लिग़ीन, मुअ़ल्लिमीन, मुदर्रिसीन, मुहिब्बीन और तमाम इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों के मसाइल ह़ल फ़रमा दे, इलाहल आ़लमीन ! हम सब को दीनो दुन्या की बरकतों से मालामाल कर दे।

कहते रहते हैं दुआ़ के वासित़े बन्दे तेरे
कर दे पूरी आरज़ू हर बे कसो मजबूर की

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ؕ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا...

صَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَاٰلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلٰوةً وَّسَلَامًا عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه...

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿۱۸۰﴾ وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۱۸۱﴾ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ...

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

❁❁❁❁❁

सह़राए मदीना (बाबुल मदीना कराची) की दुआ़ का इब्तिदाइया

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

اَللّٰهُمَّ ﴿رَبَّنَاۤ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ﴾ (پ۲،

البقرۃ:۲۰۱) اَللّٰھُمَّ ﴿رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَیْنَا صَبْرًا وَّ ثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِیْنَ﴾

(پ۲، البقرۃ:۲۵۰) اَللّٰھُمَّ ﴿رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَ اِسْرَافَنَا فِیْۤ اَمْرِنَا وَ ثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِیْنَ﴾ (پ۴، ال عمران:۱۴۷) اَللّٰھُمَّ ﴿رَبَّنَا ظَلَمْنَاۤ اَنْفُسَنَا ۫ وَ اِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَ تَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِیْنَ﴾ (پ۸، الاعراف:۲۳) اَللّٰھُمَّ ﴿رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّیٰنِیْ صَغِیْرًا﴾ (پ۱۵، بنی اسرآئیل:۲۴) اَللّٰھُمَّ ﴿فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۫ اَنْتَ وَلِیّٖ فِی الدُّنْیَا وَ الْاٰخِرَةِ ۚ تَوَفَّنِیْ مُسْلِمًا وَّ اَلْحِقْنِیْ بِالصّٰلِحِیْنَ﴾ (پ۱۳، یوسف:۱۰۱) اَللّٰھُمَّ ﴿رَبِّ اجْعَلْنِیْ مُقِیْمَ الصَّلٰوةِ وَ مِنْ ذُرِّیَّتِیْ ۖ رَبَّنَا وَ تَقَبَّلْ دُعَآءِ ۝ رَبَّنَا اغْفِرْ لِیْ وَ لِوَالِدَیَّ وَ لِلْمُؤْمِنِیْنَ یَوْمَ یَقُوْمُ الْحِسَابُ﴾ (پ۱۳، ابراھیم:۴۱-۴۰) اَللّٰھُمَّ ﴿رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَ ذُرِّیّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْیُنٍ وَّ اجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِیْنَ اِمَامًا﴾ (پ۱۹، الفرقان:۷۴) اَللّٰھُمَّ ﴿رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَ لِاِخْوَانِنَا الَّذِیْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِیْمَانِ وَ لَا تَجْعَلْ فِیْ قُلُوْبِنَا غِلًّا لِّلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَاۤ اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِیْمٌ﴾ (پ۲۸، الحشر:۱۰) اَللّٰھُمَّ اَعِنِّیْ عَلٰى ذِكْرِكَ وَ شُكْرِكَ وَ حُسْنِ عِبَادَتِكَ [1] یَا مُقَلِّبَ الْقُلُوْبِ ثَبِّتْ قَلْبِیْ عَلٰى دِیْنِكَ [2] اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ قَلْبٍ لَا یَخْشَعُ وَ مِنْ دُعَاءٍ لَا یُسْمَعُ وَ مِنْ نَفْسٍ لَا تَشْبَعُ وَ مِنْ عِلْمٍ لَا یَنْفَعُ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ هٰؤُلَاءِ الْاَرْبَعِ [3]

या अरहमर्राहिमीन...! या अरहमर्राहिमीन...! या अरहमर्राहिमीन...! या रब्बना...! या रब्बना...! या रब्बना...! या रब्बना...! या

مدینہ

1 ..... ابوداود، کتاب الوتر، باب فی الاستغفار، ۲/۱۲۳، حدیث:۱۵۲۲

2 ..... ترمذی، کتاب القدر، باب ماجاء ان القلوب... الخ، ۴/۵۵، حدیث:۲۱۴۷

3 ..... ترمذی، کتاب الدعوات، باب:ت۵، ۶۹/۲۹۳، حدیث:۳۴۹۳

रब्बना...! **या अल्लाहु**...! या रह़मानु...! या रह़ीमु...! ऐ मरीज़ों को शिफ़ा देने वाले...!!! ऐ हम गुनाहगारों के ऐबों को छुपाने वाले...!!! ऐ परेशान ह़ालों की परेशानियां दूर करने वाले मौला...!!! ऐ हम ज़लीलों के सरों पर इ़ज़्ज़त का ताज सजाने वाले...!!! तेरे सियाहकार बदकार बन्दे ह़ाज़िर हैं..!!!

कर के तौबा फिर गुनाह करता है जो
मैं वोही अ़त्तार हूं कर दो करम

ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! गुनाहों से गन्दा नामए आ'माल लिये ह़ाज़िर हैं... हाथ भी गुनाहों से सियाह, चेहरा भी गुनाहों की सियाही से काला काला है... मौला ! दिल भी काला काला है...रुवां रुवां गुनाहों में लिथड़ा हुवा है...मौला ! हमारे क़ल्ब की सख़्ती बढ़ती ही चली जा रही है...ऐ मौला ! हमारा ह़ाल बहुत बुरा है।

आह ! हर लम्ह़ा गुनह की कसरतो भर मार है
ग़लबए शैत़ान है और नफ़्से बद अत़्वार है

मुजरिमों के वासित़े दोज़ख़ भी शो'ला बार है
हर गुनह क़स्दन किया है इस का भी इक़रार है

छुप के लोगों से गुनाहों का रहा है सिलसिला
तेरे आगे या ख़ुदा ! हर जुर्म का इज़हार है

❁❁❁❁❁

दुआए शबे बराअत का इब्तिदाइया

बेवफ़ा दुन्या पे मत कर ए'तिबार
मौत आ कर ही रहेगी याद रख !
गर जहां में सौ बरस तू जी भी ले
क़ब्र रोज़ाना येह करती है पुकार

तू अचानक मौत का होगा शिकार
जान जा कर ही रहेगी याद रख !
क़ब्र में तन्हा क़ियामत तक रहे
मुझ में हैं कीड़े मकोड़े बे शुमार

याद रख ! मैं हूं अंधेरी कोठड़ी — तुझ को होगी मुझ में सुन ! वहशत बड़ी
मेरे अंदर तू अकेला आएगा — हां ! मगर आ'माल लेता आएगा
घुप अंधेरी क़ब्र में जब जाएगा — बे अ़मल ! बे इन्तिहा घबराएगा
काम मालो ज़र नहीं कुछ आएगा — ग़ाफ़िल इन्सां ! याद रख पछताएगा
क़ब्र में तेरा कफ़न फट जाएगा — याद रख ! नाज़ुक बदन फट जाएगा
सांप बिच्छू क़ब्र में गर आ गए — क्या करेगा बे अ़मल गर छा गए
गोरे नीकां बाग़ होगी ख़ुल्द का — मुजरिमों की क़ब्र दोज़ख़ का गढ़ा
कर ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी — क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शबे बराअत छुटकारे की रात है... बीमारियों से छुटकारे की रात है... तंगदस्तियों से छुटकारे की रात है... नज़्अ़ की सख़्तियों से छुटकारे की रात है...अ़ज़ाबे क़ब्र से छुटकारे की रात है...तारीकिये गोर से छुटकारे की रात है...क़ियामत की हौलनाकियों से छुटकारे की रात है...दोज़ख़ की तबाह कारियों से छुटकारे की रात है...गुनाहों की बीमारी से छुटकारे की रात है...रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जब शा'बान की पन्दरहवीं रात (शबे बराअत) आए तो इस रात में क़ियाम करो और इस दिन में रोज़ा रखो कि **अल्लाह** तआ़ला सूरज डूबने के बा'द से आस्माने दुन्या पर ख़ास तजल्ली फ़रमाता है और ए'लान फ़रमाता है कि क्या है कोई बख़्शिश का त़लबगार ! कि मैं उस को बख़्श दूं ? क्या है कोई रोज़ी त़लब करने वाला ! कि मैं उसे रोज़ी दूं ? क्या है कोई मुसीबत ज़दा कि मैं उस को रिहाई दूं ? क्या है कोई ऐसा ! क्या है कोई ऐसा ! इस क़िस्म की निदाएं होती रहती हैं यहां तक कि फ़ज्र तुलूअ़ हो जाती है।[1] इस त़रह़ आज की रात **अल्लाह** तआ़ला की रह़मत निदा देती है... उस की रह़मत तो हमारी त़रफ़ माइल है मगर आह ! हमें मांगने का ढंग नहीं आता... ऐ अपनी आख़िरत की ख़ैर के त़लबगार इस्लामी भाइयो ! गिड़गिड़ा कर हो सके तो

مدینہ

1 ..... ابن ماجہ، کتاب اقامۃ الصلاۃ، باب ماجاء فی لیلۃ النصف من شعبان، ۲/۱۶۰، حدیث: ۱۳۸۸

रो रो कर **अल्लाह** की रह़मत मांग लो...हां ! हां ! आज वोह रात है कि जिस रात में रह़मत के तीन सौ दरवाज़े खुल जाते हैं[1] आइये ! **अल्लाह** तआ़ला की रह़मत पाने के लिये मिल कर दुआ़ मांगते हैं।

दुआ़ए शबे क़द्र का इब्तिदाइया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अभी चन्द रोज़ पहले ही की बात है कि हर एक के लब पर येह बात थी कि अ़न क़रीब रमज़ान शरीफ़ की आमद होने वाली है और फिर वाक़ेई अपने जल्वों में रह़मतें और बरकतें लिये हुए हिलाले रमज़ान आस्माने दुन्या पर ज़ाहिर हो गया...हर त़रफ़ ख़ुशी की लहर दौड़ गई, हर मुसलमान शादमान हो गया, मस्जिदों में बहारें आ गईं, बज़्मे इफ़्त़ार सजाई जाने लगी...हर त़रफ़ रौनक़ें ही रौनक़ें हो गईं, नमाज़ियों की ता'दाद बढ़ गई, येह ख़ुशी के दिन बड़ी जल्दी और तेज़ी से गुज़रते चले गए...और आह ! अब सत्ताईसवीं रात आ पहुंची...इस वक़्त माहे रमज़ान के सिर्फ़ तीन या चार दिन रह गए। तो जो रमज़ान के क़द्रदान थे, आने पर ख़ुश हो गए और अब जैसे जैसे रमज़ान की रुख़्सत की घड़ी क़रीब आ रही है उ़श्शाक़े रमज़ान के दिल डूबे जा रहे हैं...ग़म के बादल उन पर छाए जा रहे हैं, ग़मे रमज़ान के मारों और रमज़ान की फ़ुर्क़त के दिल फ़िगारों की तर्जुमानी करते हुए किसी ने अल वदाअ़ कही है, अश्क बार हो कर इस अल वदाअ़ को दिल के कानों से सुनिये और अपने अन्दर अफ़्सोस की कैफ़िय्यत पैदा होने दीजिये...

आह ! क्या माहे मुबारक हम से होता है जुदा — आह ! कैसा मम्बए़ बरकात दुन्या से चला
आह ! जब इस में नहीं हम से हुई त़ाअ़त अदा — फिर वदाअ़ इस को न क्यूं रो रो करें ऐसा बजा
अल वदाअ़ अल वदाअ़ ऐ माहे ग़ुफ़रां ! अल वदाअ़ — ह़सरता वा ह़सरता ऐ माहे रमज़ां अल वदाअ़

मदीना

1 ......نزهة المجالس، باب فضل شعبان وفضل صلاة التسابيح، ۱/ ۲۱۰

اَلْوَدَاعِ اَلْوَدَاع يا شَهْرَ رَمَضان...اَلْفِراق اَلْفِراق يا شَهْرَ غُفْران...الوداع

الوداع يا شَهْرَ تراويح... اَلْفِراق اَلْفِراق يا شَهْرَ تَراويح... الوداع الوداع يا

شَهْرَ رَمَضان ...اَلْفِراق اَلْفِراق يا شَهْرَ رَمَضان ...اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

ऐ रब्बे मुस्त़फ़ा ! तू ने अपने फ़ज़्लो करम से हमें माहे रमज़ान अ़त़ा फ़रमाया, जिस की हर घड़ी रह़मत भरी है...लम्ह़ा लम्ह़ा नेकियों का पयाम...रह़मतों की छमा छम बारिशें...जन्नत के दरवाज़े सब खुल गए...दोज़ख़ पर ताले पड़ गए...शैत़ान भी क़ैद कर लिया गया...ख़ूब ख़ूब बरकतें और रह़मतें नाज़िल हुईं...आह ! हम ग़ाफ़िल लोग फिर भी माहे रमज़ान की रह़मतों से ह़िस्सा न ले सके...अफ़्सोस ! माहे रमज़ान की क़द्र न कर सके, नेकियों का अज्रो सवाब बहुत ज़ियादा बढ़ा दिया गया लेकिन हाए अफ़्सोस नेकियां न कर सके, बिल आख़िर आज सत्ताईसवीं शब आ गई...ज़ाहिर अच्छा रहा बात़िन वही मैला कुचैला, सियाह और काला...ऐ परवर दगार ! जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने दुआ़ मांगी कि जो रमज़ान को पा ले मगर अपनी मग़फ़िरत न करा सके तो उस की नाक ख़ाक आलूद हो जाए, वोह शख़्स बरबाद हो जाए, बा वुजूद रह़्मतुल्लिल आ़लमीन होने के हमारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आमीन की मोहर लगा दी...[1] तो यक़ीनन जो माहे रमज़ान पा लेने के बा वुजूद मग़फ़िरत और बख़्शिश से मह़रूम रह गया वोह हलाक और बरबाद हुवा...ऐ मालिके करीम ! हम ने अपनी मग़फ़िरत कराने का कोई सामान नहीं किया । ऐ परवर दगार ! अगर हमारी मग़फ़िरत न हुई तो हम बरबाद हो जाएंगे... ऐ मालिके करीम ! ऐ रसूले करीम के परवर दगार ! तुझे तेरे रह़मत वाले मह़बूब का वासित़ा

[1] ......كنز العمال، كتاب الصوم، باب فصل فی فضله وفضل رمضان، الجزء:٨، ٢٧٠/٤، حدیث:٢٣٢٩٠ ماخوذاً

www.dawateislami.net

हमारी मग़्फ़िरत कर दे...ऐ रब्बे करीम ! हम ने अ़शरए रह़मत ग़फ़्लत में गुज़ारा, अ़शरए मग़्फ़िरत भी जा चुका, अब जहन्नम से आज़ादी का अ़शरा भी रुख़्सत होने पर है, ऐ **अल्लाह** ! हम नातुवानों और कमज़ोरों पर रह़्म कर दे... ऐ परवर दगार ! तुझे तेरे मह़बूब के पाकीज़ा आंसूओं का सदक़ा, हम पर जहन्नम की आग ठन्डी कर दे...

❁❁❁❁❁

मैदाने अ़रफ़ात की दुआ का इब्तिदाइया

मैं मक्के में फिर आ गया या इलाही — करम का तेरे शुक्रिया या इलाही
न कर रद कोई इल्तिजा या इलाही — हो मक़्बूल हर इक दुआ या इलाही
रहे ज़िक्र आठों पहर मेरे लब पर — तेरा या इलाही तेरा या इलाही
मेरी ज़िन्दगी बस तेरी बन्दगी में — ही ऐ काश गुज़रे सदा या इलाही
न हों अश्क बरबाद दुन्या के ग़म में — मुह़म्मद के ग़म में रुला या इलाही
अ़ता कर दे इख़्लास की मुझ को ने'मत — न नज़दीक आए रिया या इलाही
मुझे औलिया की मह़ब्बत अ़ता कर — तू दीवाना कर ग़ौस का या इलाही
मैं यादे नबी में रहूं गुम हमेशा — मुझे उन के ग़म में घुला या इलाही
मेरे बाल बच्चों पे सारे क़बीले — पे रह़मत हो तेरी सदा या इलाही
दे अ़त्तारियों बल्कि सब सुन्नियों को — मदीने का ग़म या ख़ुदा या इलाही
ख़ुदाया ! अजल आ के सर पर खड़ी है — दिखा जल्वए मुस्त़फ़ा या इलाही
मेरी लाश से सांप बिच्छू न लिपटें — करम अज़ तुफ़ैले रज़ा या इलाही
तू अ़त्तार को सब्ज़ गुम्बद के साए — में कर दे शहादत अ़ता या इलाही

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ، وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

या अरहमर्राहिमीन...! या अरहमर्राहिमीन...! या अरहमर्राहिमीन...!
या रब्बना...! या रब्बना...! या रब्बना...! या रब्बना...! या रब्बना...! या रब्बना...!

ऐ रब्बे मुस्तफ़ा...! ऐ रब्बे इब्राहीम व इस्माईल...! तेरे सच्चे ख़लील हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने हमें हज की दा'वत दी और ऐ **अल्लाह** ! हम ने लब्बैक कही और आज तेरे ख़लील की दा'वत पर हम तेरे मेहमान बन कर मैदाने अरफ़ात में जम्अ हो गए...ऐ मालिको मौला ! दुन्या में येह उसूल है कि मेज़बान अपने मेहमान की दिलजूई करता है तो ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! हम तेरे मेहमान हैं...इलाहुल आलमीन ! हमें महरूम न फ़रमा...या **अल्लाह** ! या **अल्लाह** ! आज जिस तरह हम मैदाने अरफ़ात में तेरे मेहमान हैं...इसी तरह जन्नत में भी मेहमान बनाना...

لَبَّيْكَ اَللّٰهُمَّ لَبَّيْكَ لَبَّيْكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ لَبَّيْكَ اِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَ الْمُلْكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ... لَبَّيْكَ اَللّٰهُمَّ لَبَّيْكَ لَبَّيْكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ لَبَّيْكَ اِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَ الْمُلْكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ... لَبَّيْكَ اَللّٰهُمَّ لَبَّيْكَ لَبَّيْكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ لَبَّيْكَ اِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَ الْمُلْكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ

❁❁❁❁❁

इजतिमाए मीलाद में मांगी गई दुआ का इब्तिदाइया

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ، وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

جَزَى اللّٰهُ عَنَّا مُحَمَّدًا مَا هُوَ اَهْلُه... اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَاَنْزِلْهُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيَامَة... اَللّٰهُمَّ مَا اَصْبَحَ بِيْ مِنْ نِّعْمَةٍ، اَوْ بِاَحَدٍ مِّنْ خَلْقِكَ، فَمِنْكَ وَحْدَكَ لَا شَرِيكَ لَكَ ، فَلَكَ الْحَمْدُ ، وَلَكَ الشُّكْرُ ... لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ... اَللّٰهُمَّ بَلِّغْنَا رَمَضَانَ بِالصِّحَّةِ وَالْعَافِيَة...

या रब्बे मुस्तफ़ा ! ब तुफ़ैले मुस्तफ़ा ! तेरे महबूब की महब्बत में जश्ने विलादत मनाने के लिये आशिक़ाने रसूल जम्अ हैं, मौला عَزَّوَجَلَّ ! सब की हाज़िरी क़बूल फरमा...मौला ! हम गुनाहगार हैं, बदकार हैं, सियहकार हैं लेकिन मौला ! तुझ से महब्बत करते हैं, तेरे हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों पर अमल नहीं हो पाता लेकिन तेरे महबूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से महब्बत ज़रूर करते हैं, मौला (عَزَّوَجَلَّ) ! अगर तू सिर्फ़ नेकों को ही नवाज़ेगा तो हम गुनाहगार किस के दरवाज़े पर जाएंगे, मौला ! जश्ने विलादत का सदक़ा, मुख़्लिसीन का वासिता ! हमारी मग़फ़िरत फ़रमा दे..हक़ीक़ी आशिक़ाने रसूल का वासिता ! हम खोटों को क़बूल फ़रमा ले...या **अल्लाह** ! बुरे ख़ातिमे से डर लगता है, मौला ! हमारा ख़ातिमा बिल ख़ैर हो...या **अल्लाह** ! हम नेक बनना चाहते हैं मगर नफ़्सो शैतान नेक बनने नहीं देते, मौला ! जश्ने विलादत का सदक़ा हमें नेक मुत्तक़ी परहेज़गार बना...दुश्मन की मैली नज़र आलमे इस्लाम पर लगी हुई है, मौला ! आलमे इस्लाम में इत्तिहादो इत्तिफ़ाक़ पैदा फ़रमा...मुसलमानों को नेक और एक बना...

❁❁❁❁❁

ग्यारहवीं शरीफ़के इजतिमाअ़ में मांगी गई दुआ का इब्तिदाइया

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ، وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

या **अल्लाह** ! तेरे करम से हमें एक बार फिर तेरे मक़्बूल बन्दे तेरे वली और हमारे ग़ौसे पाक सय्यिद शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِي की ग्यारहवीं शरीफ़ नसीब हुई...ग़ौसे पाक के ईसाले सवाब के लिये जो कुछ टूटी फूटी इबादात हो सकीं मुख़्लिसीन के सदक़े क़बूल फ़रमा ले....ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुर्शिदी ग़ौसे आ'ज़म के सदक़े में हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत फ़रमा

दे...नज़्अ़ के वक़्त तेरे प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का भी जल्वा हो...ख़ुलफ़ाए राशिदीन का भी जल्वा हो सह़ाबए किराम की भी ज़ियारत हो...हमारे मुर्शिदे करीम ग़ौसे आ'ज़म का भी जल्वा हो...आ'ला ह़ज़रत का भी जल्वा हो...सय्यिदी कुत़्बे मदीना भी हों...औलिया की जमाअ़त भी हो...ऐ काश ! उन के जल्वों में हमारी रूह़ क़ब्ज़ हो...मीठे मदीने में शहादत की सआ़दत नसीब हो...जन्नतुल बक़ीअ़ हमारा मदफ़न बने...जन्नतुल फ़िरदौस में तेरे प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पड़ोस में मस्कन नसीब हो...

❁❁❁❁❁

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी की नमाज़े जनाज़ा के बा'द की दुआ का इब्तिदाइया

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ، وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

اَللّٰهُمَّ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ

या रब्बल मुस्त़फ़ा جَلَّ جَلَالُهٗ ! हम सब के गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमा..या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम सब की मग़्फ़िरत फ़रमा...प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सारी उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमा...ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मर्ह़ूम मुफ़्ती मुह़म्मद फ़ारूक़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की मग़्फ़िरत फ़रमा...या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! अ़न क़रीब क़ब्र की तन्हाइयों में इन्हें तन्हा छोड़ दिया जाएगा...ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारे ह़ाजी फ़ारूक़ की क़ब्र पर रह़मतो रिज़्वान के फूल बरसा...या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! क़ब्र की वह़शत और तंगी को दूर फ़रमा, इन को क़ब्र में अम्न नसीब फ़रमा...या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! क़ब्र मुजरिमों को इस त़रह़ दबाती है कि पस्लियां टूट कर एक दूसरे में पैवस्त हो जाती हैं लेकिन तेरे नेक बन्दों को इस त़रह़ दबाती है जैसे मां

अपने बिछड़े हुए लाल को सीने से चिमटा लेती है।[1] ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम तुझ से रह़्म की दरख़्वास्त करते हैं कि हमारे फ़ारूक़ भाई को क़ब्र इसी त़रह़ दबाए, जिस त़रह़ मां अपने बिछड़े हुए लाल को शफ़्क़त से मामता भरी गोद में छुपा लेती है, अपने सीने से चिमटा लेती है...ऐ मौला عَزَّوَجَلَّ ! मर्ह़ूम की क़ब्र को ता ह़द्दे नज़र वसीअ़ फ़रमा...ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरे फ़ारूक़ पे कोई तक्लीफ़ न आए, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरे फ़ारूक़ के सारे गुनाह मुआ़फ़ कर दे...ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरे फ़ारूक़ को क़ब्र में वह़शत न हो, घबराहट न हो, तंगी न हो...ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरे फ़ारूक़ को अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जल्वों में गुम कर देना...या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रुख़े रौशन का वासित़ा मेरे फ़ारूक़ की क़ब्र को रौशन कर दे...ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरे फ़ारूक़ को बख़्श दे..तुझे तेरे प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का वासित़ा...मुर्सलीन का वासित़ा...सह़ाबा का वासित़ा...ताबेईन का वासित़ा...सय्यिदुश्शुहदा इमामे हुसैन का वासित़ा...सय्यिदुना अ़ब्बास अ़लमदार का वासित़ा...अ़ली अक्बर व अ़ली असग़र का वासित़ा...करबला के हर शहीदो असीर का वासित़ा...मेरे फ़ारूक़ की क़ब्र को जन्नत का बाग़ बना दे...ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! येह आ़लिमे दीन थे, इन्हों ने तेरे दीन की जो ख़िदमत की, उसे क़बूल कर ले...ऐ मौला ! येह बेचारे भरी जवानी में हम से रुख़्सत हो गए...ऐ रह़मत वाले मौला عَزَّوَجَلَّ ! तेरी रह़मत के ह़वाले...ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तेरी रह़मत के ह़वाले...ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तेरी रह़मत के ह़वाले...मौला عَزَّوَجَلَّ ! मेरे ग़ौसे पाक का वासित़ा ! मेरे फ़ारूक़ पर करम कर दे...मेरे आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान का वासित़ा...मेरे पीरो मुर्शिद सय्यिदी कुत़्बे मदीना ज़ियाउद्दीन मदनी का वासित़ा ! मेरे फ़ारूक़ पर करम कर

---

1 .....बहारे शरीअ़त, 1 / 105 माख़ूज़न

दे...इन्हें रह़मतों के साए तले जगह दे दे...इन की क़ब्र पर रह़मतों का साएबान खड़ा हो जाए...ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इन के फ़ुयूज़ो बरकात क़ियामत तक जारी रहें...ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! सब को ईमान की सलामती नसीब कर दे...हम सब को मदीनए मुनव्वरा में ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा मह़बूब के जल्वों में शहादत नसीब कर दे...जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस अ़ता कर दे...इलाहुल आ़लमीन ! मेरे फ़ारूक़ को भी मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का जन्नत में पड़ोस दे दे...या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इन के घर वालों को इन के दोस्तों को और दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा को सब्रे जमील अ़ता कर दे और इस सब्र पर अज्र अ़ता फ़रमा...इलाहुल आ़लमीन ! इन के घरवालों को शिक्वा व शिकायत से बचा।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

❁❁❁❁❁

मदनी मुज़ाकरे के इख़्तिताम पर मांगी जाने वाली दुआ

या रब्बल मुस्त़फ़ा جَلَّ جَلَالُهٗ ! आज के मदनी मुज़ाकरे और अब तक की मेरे पास मौजूद नेकियां तेरी बारगाह में पेश करता हूं क़बूल फ़रमा। या रब्बे करीम ! इन नेकियों का सवाब मेरे अ़मल के मुत़ाबिक़ नहीं बल्कि अपनी रह़मत के शायाने शान अ़ता फ़रमा।

मेरी नेकियों का सवाब और मुझे ईसाले सवाब की गई नेकियों का सवाब हमारी त़रफ़ से अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इनायत फ़रमा। ब वसीलए रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मज़ीद इन इन को येह सवाब पहुंचा।

जुम्ला अम्बिया व मुर्सलीन... खुलफ़ाए राशिदीन... उम्महातुल मोमिनीन... तमाम सह़ाबा व ताबेईन व तब्अ़ ताबेईन... अइम्मए मुज्तहिदीन... उ़लमाए कामिलीन... मशाइख़े आ़मिलीन... मुफ़स्सिरीन... मुह़द्दिसीन... तमाम बुज़ुर्गाने दीन... कुल मोमिनातो मोमिनीन... मुस्लिमातो मुस्लिमीन... बिल ख़ुसूस इन्हें येह सवाब पहुंचे... वालिदैने मुस्त़फ़ा, ह़सनैने करीमैन, शहीदानो असीराने करबला..जमीअ़ अह्ले बैते अत्हार... इमामे आ'ज़म... ग़ौसे आ'ज़म... इमाम ग़ज़ाली... ग़रीब नवाज़... आ'ला ह़ज़रत.. सद्रे शरीअ़त... कुत़्बे मदीना... सदरुल अफ़ाज़िल...मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान... मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी... ह़ाजी मुश्ताक़... ह़ाजी ज़म ज़म रज़ा... तमाम मुबल्लिग़ातो मुबल्लिग़ीन मर्ह़ूमीन और मदनी इन्आ़मात की आ़मिलातो आ़मिलीन।

या **अल्लाह** ! हम सब के गुनाहों को मुआ़फ़ कर दे...मौला ! हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत फ़रमा...या **अल्लाह** ! उ़म्र का जाम लबरेज़ होने को है मगर आह ! गुनाहों की आ़दत जान नहीं छोड़ रही, मौला ! ऐसा करम कर दे कि गुनाहों की आ़दत निकल ही जाए...मौला ! ऐसा करम कर दे कि नेकियों की आ़दत पड़ ही जाए...या **अल्लाह** ! जब तेरी बारगाह में ह़ाज़िरी हो तो हमारे पल्ले कोई गुनाह न हो...ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! यक़ीनन हम में अ़ज़ाब सहने की त़ाक़त नहीं, मौला ! करम करना और हमारी क़ब्र को सांप और बिच्छुओं की आमाजगाह बनने से बचा लेना...मौला ! हमारी क़ब्र तेरे मह़बूब के नूर से जगमगाती रहे...इलाहुल आ़लमीन ! जिन जिन इस्लामी भाइयों ने दुआ़ओं के लिये कहा उन की जाइज़ मुरादों पर रह़मत की नज़र फ़रमा।

कहते रहते हैं दुआ़ के वासित़े बन्दे तेरे
कर दे पूरी आरज़ू हर बे कसो मजबूर की

❁❁❁❁❁

चालीस क़ुरआनी दुआएं

1. رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ

ऐ रब हमारे हम से क़बूल फ़रमा बेशक तू ही है सुनता जानता।

2. رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَآ اُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ ۠ وَاَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَا ۚ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ

ऐ रब हमारे और कर हमें तेरे हुज़ूर गर्दन रखने वाले और हमारी औलाद में से एक उम्मत तेरी फ़रमां बरदार और हमें हमारी इबादत के क़ाइदे बता और हम पर अपनी रहमत के साथ रुजूअ़ फ़रमा बेशक तू ही है बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान।

3. رَبِّ اجْعَلْنِيْ مُقِيْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ ۖ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَآءِ

ऐ मेरे रब मुझे नमाज़ का क़ाइम करने वाला रख और कुछ मेरी औलाद को ऐ हमारे रब और हमारी दुआ सुन ले।

4. رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ

ऐ रब हमारे हमें न पकड़ अगर हम भूलें या चूकें।

5. رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا ۟ وَاغْفِرْ لَنَا ۟ وَارْحَمْنَا ۟ اَنْتَ مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ

ऐ रब हमारे और हम पर वोह बोझ न डाल जिस की हमें सहार न हो और हमें मुआफ़ फ़रमा दे और बख़्श दे और हम पर मेहर कर तू हमारा मौला है तू काफ़िरों पर हमें मदद दे।

6. رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ

ऐ रब हमारे दिल टेढ़े न कर बा'द इस के कि तू ने हमें हिदायत दी और हमें अपने पास से रहमत अ़ता कर बेशक तू है बड़ा देने वाला।

7. رَبَّنَآ اِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ

ऐ रब हमारे बेशक तू सब लोगों को जम्अ़ करने वाला है उस दिन के लिये जिस में कोई शुब्हा नहीं बेशक **अल्लाह** का वा'दा नहीं बदलता।

8. رَبَّنَآ اٰمَنَّا بِمَآ اَنْزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُوْلَ فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ

ऐ रब हमारे हम उस पर ईमान लाए जो तू ने उतारा और रसूल के ताबेअ़ हुए तो हमें ह़क़ पर गवाही देने वालों में लिख ले।

9. رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَاِسْرَافَنَا فِيْٓ اَمْرِنَا وَثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ

ऐ हमारे रब बख़्श दे हमारे गुनाह और जो ज़ियादतियां हम ने अपने काम में कीं और हमारे क़दम जमा दे और हमें उन काफ़िर लोगों पर मदद दे।

10. رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا ۚ سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ

ऐ रब हमारे तू ने येह बेकार न बनाया पाकी है तुझे तो हमें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा ले।

11. رَبَّنَآ اِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ اَخْزَيْتَهٗ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ

ऐ रब हमारे बेशक जिसे तू दोज़ख़ में ले जाए उसे ज़रूर तू ने रुस्वाई दी और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं।

12. رَبَّنَآ اِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُّنَادِيْ لِلْاِيْمَانِ اَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا ۗ

ऐ रब हमारे हम ने एक मुनादी को सुना कि ईमान के लिये निदा फ़रमाता है कि अपने रब पर ईमान लाओ तो हम ईमान लाए।

13. رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّاٰتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الْاَبْرَارِ

ऐ रब हमारे तू हमारे गुनाह बख़्श दे और हमारी बुराइयां महव फ़रमा दे और हमारी मौत अच्छों के साथ कर।

14. رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰى رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ

ऐ रब हमारे और हमें दे वोह जिस का तू ने हम से वा'दा किया है अपने रसूलों की मा'रिफ़त और हमें क़ियामत के दिन रुस्वा न कर बेशक तू वा'दा ख़िलाफ़ नहीं करता।

15. رَبَّنَآ اٰمَنَّا فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ

ऐ हमारे रब हम ईमान लाए तो हमें ह़क़ के गवाहों में लिख ले।

16. رَبِّ زِدْنِیْ عِلْمًا

ऐ मेरे रब मुझे इ़ल्म ज़ियादा दे।

17. رَبَّنَا ظَلَمْنَاۤ اَنْفُسَنَا ۫ وَ اِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَ تَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِیْنَ

ऐ रब हमारे हम ने अपना आप बुरा किया तो अगर तू हमें न बख़्शे और हम पर रह़्म न करे तो हम ज़रूर नुक़्सान वालों में हुए।

18. رَبَّنَا افْتَحْ بَیْنَنَا وَ بَیْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَ اَنْتَ خَیْرُ الْفٰتِحِیْنَ

ऐ हमारे रब हम में और हमारी क़ौम में ह़क़ फ़ैसला कर और तेरा फ़ैसला सब से बेहतर है।

19. رَبَّنَاۤ اَفْرِغْ عَلَیْنَا صَبْرًا وَّ تَوَفَّنَا مُسْلِمِیْنَ

ऐ रब हमारे हम पर सब्र उंडेल दे और हमें मुसलमान उठा।

20. رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ

इलाही हम को ज़ालिम लोगों के लिये आज़माइश न बना।

21. رَبَّنَاۤ اِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِیْ وَ مَا نُعْلِنُ ؕ

ऐ हमारे रब तू जानता है जो हम छुपाते हैं और जो ज़ाहिर करते।

22. رَبَّنَا اغْفِرْ لِیْ وَ لِوَالِدَیَّ وَ لِلْمُؤْمِنِیْنَ یَوْمَ یَقُوْمُ الْحِسَابُ

ऐ हमारे रब मुझे बख़्श दे और मेरे मां बाप को और सब मुसलमानों को जिस दिन ह़िसाब क़ाइम होगा।

23. رَبَّنَاۤ اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً وَّ هَیِّئْ لَنَا مِنْ اَمْرِنَا رَشَدًا

ऐ हमारे रब हमें अपने पास से रह़मत दे और हमारे काम में हमारे लिये राहयाबी के सामान कर।

24. رَبَّنَاۤ اِنَّنَا نَخَافُ اَنْ یَّفْرُطَ عَلَیْنَاۤ اَوْ اَنْ یَّطْغٰی

ऐ हमारे रब बेशक हम डरते हैं कि वोह हम पर ज़ियादती करे या शरारत से पेश आए।

25. رَبَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ

ऐ हमारे रब हम ईमान लाए तो हमें बख़्श दे और हम पर रह़्म कर और तू सब से बेहतर रह़्म करने वाला है।

26. رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ ۖ اِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا

ऐ हमारे रब हम से फेर दे जहन्नम का अ़ज़ाब बेशक उस का अ़ज़ाब गले का गुल है।

27. رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا

ऐ हमारे रब हमें दे हमारी बीबियों और हमारी औलाद से आंखों की ठन्डक और हमें परहेज़गारों का पेश्वा बना।

28. رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَّحْمَةً وَّعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِيْنَ تَابُوْا وَاتَّبَعُوْا سَبِيْلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ

ऐ रब हमारे तेरे रह़मत व इ़ल्म में हर चीज़ की समाई है तो उन्हें बख़्श दे जिन्हों ने तौबा की और तेरी राह पर चले और उन्हें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा ले।

29. رَبَّنَا وَاَدْخِلْهُمْ جَنّٰتِ عَدْنِ الَّتِيْ وَعَدْتَّهُمْ

ऐ हमारे रब और उन्हें बसने के बाग़ों में दाख़िल कर जिन का तू ने उन से वा'दा फ़रमाया है।

30. رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِاِخْوَانِنَا الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِيْ قُلُوْبِنَا غِلًّا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

ऐ हमारे रब हमें बख़्श दे और हमारे भाइयों को जो हम से पहले ईमान लाए और हमारे दिल में ईमान वालों की त़रफ़ से कीना न रख।

31. رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَاِلَيْكَ اَنَبْنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ

ऐ रब हमारे हम ने तुझी पर भरोसा किया और तेरी ही त़रफ़ रुजूअ़ लाए और तेरी ही त़रफ़ फिरना है।

32. رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَاغْفِرْ لَنَا

ऐ हमारे रब हमें काफ़िरों की आज़माइश में न डाल और हमें बख़्श दे।

33. رَبَّنَآ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّ فِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّ قِنَا عَذَابَ النَّارِ

ऐ रब हमारे हमें दुन्या में भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे और हमें अ़ज़ाबे दोज़ख़ से बचा।

34. رَبَّنَا وَ لَا تَحْمِلْ عَلَیْنَآ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِنَا

ऐ रब हमारे और हम पर भारी बोझ न रख जैसा तू ने हम से अगलों पर रखा था।

35. رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَ قِنَا عَذَابَ النَّارِ

ऐ रब हमारे हम ईमान लाए तो हमारे गुनाह मुआ़फ़ कर और हमें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा ले।

36. رَبِّ اَوْزِعْنِیْٓ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِیْٓ اَنْعَمْتَ عَلَیَّ وَ عَلٰى وَالِدَیَّ وَ اَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ وَ اَدْخِلْنِیْ بِرَحْمَتِكَ فِیْ عِبَادِكَ الصّٰلِحِیْنَ

ऐ मेरे रब मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं शुक्र करूं तेरे एह़सान का जो तू ने मुझ पर और मेरे मां बाप पर किये और येह कि मैं वोह भला काम करूं जो तुझे पसन्द आए और मुझे अपनी रह़मत से अपने उन बन्दों में शामिल कर जो तेरे कुर्बे ख़ास के सज़ावार हैं।

37. رَبِّ اشْرَحْ لِیْ صَدْرِیْ ﴿۲۵﴾ وَ یَسِّرْ لِیْٓ اَمْرِیْ ﴿۲۶﴾ وَ احْلُلْ عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِیْ ﴿۲۷﴾ یَفْقَهُوْا قَوْلِیْ

ऐ मेरे रब मेरे लिये मेरा सीना खोल दे और मेरे लिये मेरा काम आसान कर और मेरी ज़बान की गिरह खोल दे कि वोह मेरी बात समझें।

38. رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّیٰنِیْ صَغِیْرًا

ऐ मेरे रब तू इन दोनों पर रह़्म कर जैसा कि इन दोनों ने मुझे छुटपन में पाला।

39. رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ

ऐ हमारे रब हमें ज़ालिमों के साथ न कर।

40. رَبَّنَآ اَتْمِمْ لَنَا نُوْرَنَا وَ اغْفِرْ لَنَا

ऐ हमारे रब हमारे लिये हमारा नूर पूरा कर दे और हमें बख़्श दे।

फ़ेहरिस्त

उनवान	सफ़्हा	उनवान	सफ़्हा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	दुआ में ख़िलाफ़े शरअ़ अश्आ़र से इजतिनाब कीजिये	18
दुआ़ का त़रीक़ा मुस्त़फ़ा ने सिखाया	1	सोच समझ कर मांगिये	18
दुआ़ की अहम्मिय्यत व फ़ज़ीलत	2	दुआ़ में ग़ैर मोह़तात़ जुम्लों की 18 मिसालें	18
दुआ़ से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें	3	अमीरे अह्ले सुन्नत की मुख़्तसर व तरमीम शुदा दुआ़एं	22
दुआ़ के आदाब को पेशे नज़र रखिये	4		
दुआ़ में अल्फ़ाज़ का इन्तिख़ाब	4	सह़राए मदीना (मदीनतुल औलिया मुल्तान शरीफ़) की दुआ़	22
दुआ़ में हाथ उठाने का त़रीक़ा	5		
किन बातों की दुआ़ करना मन्अ़ है ?	6	सह़राए मदीना (बाबुल मदीना कराची) की दुआ़ का इब्तिदाइया	27
आज़माइश मत मांगिये	7		
अल्लाह तआ़ला को किन नामों से पुकारना मन्अ़ है ?	11	दुआ़ए शबे बराअत का इब्तिदाइया	29
		दुआ़ए शबे क़द्र का इब्तिदाइया	31
ऐ ह़ाज़िर ! ऐ नाज़िर ! न कहें	12	मैदाने अ़रफ़ात की दुआ़ का इब्तिदाइया	33
इस त़रह़ के जुम्लों से लाज़िमी बचिये	13	इजतिमाए़ मीलाद में मांगी गई दुआ़ का इब्तिदाइया	34
तुझे तेरे सरकार का वासित़ा ! न कहें	14		
तू बख़्शने पर आए तो मुश्रिक भी बख़्शा जाए ! न कहें	15	ग्यारहवीं शरीफ़ के इजतिमाअ़ में मांगी गई दुआ़ का इब्तिदाइया	35
ऐ सख़ी ! सख़ावत कर दे ! न कहें	15	मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी की नमाज़े जनाज़ा के बा'द की दुआ़ का इब्तिदाइया	36
तू हमें मत भूल जाना ! न कहें	16		
अपने फ़ारिग़ अवक़ात में हमारी दुआ़ सुन ले ! न कहें	16	मदनी मुज़ाकरे के इख़्तिताम पर मांगी जाने वाली दुआ़	38
मुझ पर तंगदस्ती डाल कर ज़ुल्म न कर ! न कहें	17	चालीस क़ुरआनी दुआ़एं	40
ऐ अल्लाह मियां ! न कहें	17	फ़ेहरिस्त	45
तलफ़्फ़ुज़ और ए'राब की दुरुस्ती	17	मआख़िज़ो मराजेअ़	46

ماخذ ومراجع

نمبر شمار	کتاب	مصنف	مطبوعہ
1	ترجمہ کنزالایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
2	تفسیر بغوی	امام ابو محمد حسین بن مسعود فراء بغوی، متوفی ۵۱۶ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت، ۱۴۱۴ھ
3	روح المعانی	ابو الفضل شہاب الدین سیّد محمود آلوسی، متوفی ۱۲۷۰ھ	دار احیاء التراث العربی بیروت، ۱۴۲۰ھ
4	روح البیان	مولی الروم شیخ اسماعیل حقی بروسی، متوفی ۱۱۳۷ھ	دار احیاء التراث العربی بیروت، ۱۴۰۵ھ
5	صراط الجنان	مفتی محمد قاسم قادری عطاری	مکتبۃ المدینہ کراچی
6	صحیح مسلم	امام ابو حسین مسلم بن حجاج قشیری، متوفی ۲۶۱ھ	دار المغنی عرب شریف، ۱۴۱۹ھ
7	سنن ابو داود	امام ابو داؤد سلیمان بن اشعث سجستانی، متوفی ۲۷۵ھ	دار احیاء التراث العربی بیروت، ۱۴۲۱ھ
8	سنن الترمذی	امام ابو عیسی محمد بن عیسی ترمذی، متوفی ۲۷۹ھ	دار الفکر بیروت، ۱۴۱۴ھ
9	مستدرک	امام ابو عبد اللہ محمد بن عبد اللہ حاکم نیشاپوری، متوفی ۴۰۵ھ	دار المعرفہ بیروت، ۱۴۱۸ھ
10	شعب الایمان	امام ابو بکر احمد بن حسین بن علی بیہقی، متوفی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت، ۱۴۲۱ھ
11	سنن ابن ماجۃ	امام ابو عبد اللہ محمد بن یزید ابن ماجہ، متوفی ۲۷۳ھ	دار المعرفۃ بیروت، ۱۴۲۰ھ
12	کنز العمال	علی متقی بن حسام الدین برہان پوری، متوفی ۹۷۵ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت، ۱۴۱۹ھ
13	مرآۃ المناجیح	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	ضیاء القرآن، مرکز الاولیاء لاہور
14	بحر الرائق	شیخ محمد بن حسین بن علی الطوری القادری، متوفی ۱۱۳۸ھ	کوئٹہ بلوچستان
15	شرح العقائد النسفیۃ	نجم الدین ابی حفص عمر بن محمد النسفی	مکتبۃ المدینۃ کراتشی ۱۴۳۰ھ
16	تنبیہ المغترین	عبد الوہاب بن احمد بن علی شعرانی، متوفی ۹۷۳ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۵ھ
17	نزھۃ المجالس	عبد الرحمن بن عبد السلام الصفوری الشافعی متوفی ۸۹۳ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت، ۱۴۱۹ھ
18	فتاویٰ فیض الرسول	مفتی جلال الدین احمد امجدی	شبیر برادرز لاہور
19	فتاویٰ رضویہ	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	رضا فاؤنڈیشن لاہور
20	بہار شریعت	مفتی محمد امجد علی اعظمی، متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی
21	نماز کے احکام	ابو بلال محمد الیاس قادری رضوی	مکتبۃ المدینہ کراچی ۱۴۲۴ھ
22	کفریہ کلمات	ابو بلال محمد الیاس قادری رضوی	مکتبۃ المدینہ کراچی ۱۴۳۰ھ
23	ایمان کی حفاظت	مفتی محمد قاسم قادری عطاری	مکتبۃ المدینہ کراچی
24	فضائل دعا	رئیس المتکلمین مولانا نقی علی خان متوفی ۱۲۹۷ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی ۱۴۳۰ھ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमे'रात बा'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबियत के लिये मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मेरा मदनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ के लिये "मदनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

0148669

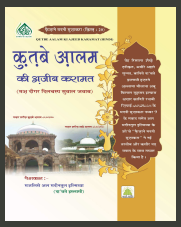

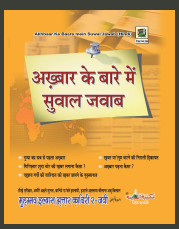

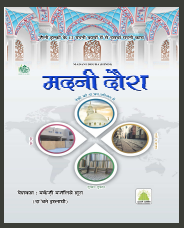

DAWAT-E-ISLAMI

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

❁ देहली :- मक्तबतुल मदीना, उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560

❁ अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200

❁ मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा स्ट्रीट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997

❁ हैदराबाद :- मक्तबतुल मदीना, मुग़ल पुरा, पानी की टांकी, हैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786

E- mail : hindibook@dawateislamihind.net, Web : www.dawateislami.net